म्हारी कवितावां

आनजू बानू

राजस्थानी परोटण

करुणा शङ्कर श्रीमाली


रीया आर्टस्
27/8ए वाटरलू स्ट्रीट कोलकाता 700 069

MHARI KAVITAVAN A COLLECTION OF
ANJU BANU S BENGALI POEMS TRANSLATED
INTO RAJASTHANI BY KARUNA SHANKAR SHRIMALI

प्रथम प्रकाशन दीयाळी, 2003

आनज बान

प्रकाशक रीया आर्टस्
27/8 ए वाटरलू स्ट्रीट
कालकाता - 700 069

- प्राप्ति स्थान -

करुणा शङ्कर श्रीमाली
ब्रह्मपुरी बीकानेर-334001
राजस्थान

ईनामुर रहमान
119/वी जायगीर घाट राड
कोलकाता - 700 063

प्रच्छद अभिलाषा रैड्डी

मुद्रण श्रीमाली कम्प्युटर्स
22 शिव ठाकुर लन कालकाता 700 007

मूल्य एक सौ रिपिया



अजू बानू री
बंगला कवितावां रै
राजस्थानी परोटण नै
सुणता-बांचता थकां

हेताळू करुणा शंकर रै साथ सुरा री पारख्या करकरावण
वाळू रूप नै ई जाणतो हो लारलै बरसां आरखे बंगाल
रा जनकवि नजरुल इस्लाम री कवितावां रा
राजस्थानी प्रतिरूप सुण बांच'र करुणाशंकर रै
दूजै रूप सूं ओळखाण हुई, अचरज और हरख सूं
हीयो भरीजग्यो

म्हारै ई हरख मे एक दिन अचाणचक सिरै वृद्धि
हुई बंगाल री नूवी पीढी री सबद सिल्पी अजू बानू
म्हारै अर करुणाशंकर री सारखी मे आपरी कवितावां
सुणाई सुणतां-सुणतां म्हारी आंख्यां सामैं तस्लीमा-
प्रभा खेतान-मृणाल पांडे रा चितराम मंडीजता
लाग्या नारी रै ओटीज्योडै रै विद्रोह रा कई-कई
ओळिया बोलता सा लाग्या

नजरुल री कवितावां री
राजस्थानी परोटण तो कई बेर सुणियो-बांच्यो -
अजू बानू री बंगाली उगेरण 'सूरज रै दूर
पडनैरा सबद', 'दिवलै रै पुरराधै रा बाग'
'रुण ठोडतो संगळा ई एकला' 'डागळै ऊपर
गायबो आमो' मरतौ इतिहास रो लेखो-जोखो
बंगला कवितावां रै ईंये राजस्थानी रूपां रो अरथ
समझता म्हनै आ लिखणीज पडै कै करुणाशंकर
अजू बानू री भावनावां सूं अतस पिछाण करी है
सबदां नै सिरजण रो रूप देवती बंगाल री नूवी

पीढी आपरै समै नै ऊंतरी मेरी आखं सूं देखण मे
लाग्योडी है अजू आपरी कवितावां मे जठै सदियां रा
गामा उघाडै बठैई आ परम्परा रा नूवां चोळा भी
सीवणा जाणै

जग्या-जग्या नारी रा दुख पाठक नै तपावता सालतौ
पसवाडै ई मिनखाचूण री संजीवणी रूप पाठक नै
बाचतौ सो दीसै
बंगाल रै धिरै लिखारा सू लै हिन्दी राजस्थानी
पाठक मोकळा बरसां सूं आपरी भावनावां मे
सजोवतो रैयौ है नवी पीढी रा सबद रूप राजस्थानी
पाठकां रै सामै कमतीज ई आया है
जिया राजस्थानी मे आपरी ओज अर मिठास है
वियाई अजू री कवितावां मे रचणा-दीठ अहम है,
बठैई बंगला भाषा अर जूण री हरियल रास गमई
अजू जिया सबदां रै चकारिया माय फेरया फिरै न
सावळ बे फेरया करुणा शंकर रै राजस्थानी प्रतिरुपा
(परोटण) मे दीसै
म्हनै भरोसो है कै अजूबाबू अर करुणा शंकर री
आ जुगलबंदी राजस्थानी रा पाठक आपरी
समझ री बाथां मे भरसी अर बंगला-राजस्थानी
अपणायत रो नवो सरूप सामै आसी
अजूबाबू अर करुणा शंकर नै म्हारी घणी-घणी
हेत आ सबदां साथै आ उडीक भी है करुणाशंकर
अजूबाबू जेडी नूवी पीढी रै आखरां-ओळियां
नै परोसतो रैसी

हरीश भादाणी
बीकानेर
4 मार्च 03

म्हारी कवितावां

हिवडै रै फूठरापै रो बाग

म्हारै हिवड़ै बिचाळै एक फूठरो बाग हो
आ बात घणा ई जाणता हा ।
इण माहि सगळा 'परस कातर फूल खिलता रैवता हा ।
कोई सूगळी वाय वैवताई
उण ई' छिन सगळा फूल झड जावता हा ।
किण ई दूर स्यू जद सोरम बैवती आवती
हिवडै री सोरम बी सागै घुळ जावती ।
एक काळो भवरो सोचतो —
ओ तो कोई फूठरापो ई' ज नी है ।
हज़ारू बागा माहि मण्डरातो
सैत चाखण बजाय
कुचरणी करणै री कळा करतो ।
क्यू कै हिवडै रो फूठरापो कितरो पवित्र अर
अपूर्व हुय सकै —
उणनै मालूम ई कोनी हो ।
जदैई बो चाबतो डसतो, खिण्डावतो
बाग रै बी फूठरापै नै गुमावतो उजाडतो थका
अजताई खिल्योडा है कितराई सोरम फूल ।
सकट माय पड्यो भवरो
दूर स्यू देखै उण ठौड
एक तितली घर माण्ड्यो है
जकी फूला नै छूवै कोनी,
फगत दीठ स्यू भर राखै
फूठरापै रा बाग ।

म्हारी कविता रो मॉडल

पूठा घिर पधारो नी 'अरूमय
थानै म्हारी कविता रो मॉडल बणावूली ।
थानै दूजै नाव रो मॉडल बणाई जद
ठोकरा खाई ही गेला घाटा
धिक्कार मिळी ही साहित्य रै जळसै ।

थानै सुरा माय पोवण री कॉपी माय कोरूली
जणै ठण्डी नींद चाखी तर्‌या आया, मायनै वडैली बाय
'रीड रो गुच्छो धूजाया देखू
सबद निसरै ।
इण बेळा मनना सिधाज्यो अरूमय ।
विद्रोही मेघडला जितरी आणन्द री विरखा बरसाय
नैणा माय बीज ढाकै जाय
हू था खातर बणावूली कल्पना रै मखमली सबदा रो तक्यिो
सबद विन्यास रो कवळो नरम बिछाणो ।
म्हानै कस परा लिपटाय नींद लीज्यो 'अरूमय ।
रात गैरी हुवणद्‌यो सगळारा दिवला बुझणद्‌यो
करड़ै अधारै माय हू दिव्य उजाळो बण्या जगूली
एकली ई ज सूरज रा सात्यू रग होऊली ।
इण बार तो रै 'ई ज जावौ अरूमय' ।
हू जितरा चोखा सबद मूण्डै बोलू हू आपरै दुर्बळ हियै-पिण्ड रा
जळ माय रम्मण खातर जळ पगा चालता माटी सबदा री भीड़
कवळो नरम बिछाणो, सूरज रो सतरगी इन्नरधणस
सगळा था खातर ।
थे सदै खातर रै जावौनी
म्हारी कविता रा 'मॉडल' होया ।

आसीस रो हाथ

इतरा दिन माय ई' रयी ही
निजनै ल्याई नी उजाळै माय
इण बार मुगत हुई हू,
सगळा ई' देखल्यो ।

किणबिध नाव रै विचाळै छन्द,
शिल्प रै विचाळै शिल्प,
किणबिध हिवड़ै रा कमळ खिलता रैवै
गुलाब ई' बिना अन्त ।

कमळ खिलै, कदम्ब खिलै
गुनगुन करिया भवरा रळमिळै
सिह होया नैडै आवै
'श्रद्धा नदी'' रै गङ्गाजळ माय
''श्रद्धावती रै लुळ्योड़ै सीस
आसीस रो हाथ राखै ।

साथियै रो मूळ मन्तर

मौत नी,
अनिवार्य उजाळै रै उकळत माहि ऊगतो सूरज ।
हे दवता, हे महान प्राज्ञ देवता
म्हारी बुझती अगण माय करा पावळ सीजाय द्यो
म्हारा प्यारा निजू आत्मीय जणा रो आज घरा न्तो ।

हू पुरखा री सभ्व्यायाड़ी पखी थारै नावै
आखी देह स्यू काठी झाल राखी है आखै जीवण ।
म्हारी आ नैनी-सी जरूत पूरण करद्यो ।

कितरा मङ्गळ्यट, चतुरदसी, नेमरात,
दिन रा वरत उपवास,
पामळ्या लारै बीधता भयकर खोटा रा घाव,
माटी-कादौ पित्त, उल्टी सगळोई
फूठरो सत् समझ्या मानू ।

हे देवता हे महान प्राज्ञ देवता
म्हारी प्रकृत अरदास नै
ठावस रो भरोसौ दीज्यो
हू साथियै रै मूळ मन्तरा
बरत पाळती ई' ज रैवूली ।

खुली बतळावण

म्ह लुक जावाला विस्वास री सीप माहि ।
यू साची बोलण री जरूत नी ही
तौई सगळा री सका उकसाय ग्या
नूवै हरख री सरूआत हुवताई ।

बोलौ किणविध खारी दीठ रै सामी बैठो रैवू ?
किणविध बै छाणछिप राखती वाता रा ढव लुकाय राखू ?
आप अन्तर माय रैवणवाळी बणाय सकौला नी, जाणू,
धूड़ै झडती गेला घूमावौला आखै दिन ।
खुल्ली बतळावण री खोट स्यू रीस करता
पीड़ पुरसज्यो मत ना ।
सगळा ज्यू सिरीसी सोचतो रैवू
एक ई ज दुनियादारी रै बिन्दु कानी ।
इणविध कुण किण नै मन माय राखै ?
परस रो धुवो बचाया
इणविध कुण किणनै सुख देवै ?
सोच सकौला नी
औ धौळो सङ्घ
किण ई' दिन गुमावण रो नी है
गुलाब जळ स्यू धोयोड़ी आ माटी री मूरत
धुवतारै रै एक ई' ज बिन्दु माहि
पूरण चित्त गुम्योड़ी रैवै ।

समरथ - प्रीत

जागण द्यो हिवड़ै री किरण्या माय
अगण - अरथी रो गिर इगरज सुख
मन रै विचाळै वैगणी उजाळो
पिघळावै है मन ।
गला - घाटा नी जाणता झरैला किण छिन ।
जदेई इण वार तय कऱ्या है,
पाथर राखूली मनड़ै,
उण ई पाथर नै बाध्या
हू बाध राखू खुणै किण नै ?
च्यारू खुणा वी हियै - सरवरियै
मछळी पुरसूली प्रीतड़ली री ।
दिन रात वी ई'ज मछळी नै
भोजन द्यूली मन री ।
वेदना रा दो नैण भऱ्या
द्यूली घणौ ई'जळ
गेला चालता बटाउड़ा
देखैला लगोलग ।
कोई बोलैलो समरथ प्रीत
कोई बोलैलो कूड़ी ।

थिरगिच भारी पाथर

थोडो' क ई' ज बायरियो नी
एक ई' दिरखत रो पात हालै नी
ऐडै समै किण री ई' ओळूड़ी आवै नी,
किण नै ई' मन माय राखण री बात ई' ज नी ।
हू म्हारो बावळोपणो लिया ई' रैवू ।
कविता रै सबद-चकारियै माय फिरू ।
अर पेट री चामडी सूनी होवताई'
अस्थिर होया घूमती फिरती रैवू ।
आ बात सगळाई' जाणता
बीया ई' चादड़लै बिना, बिनदिवलै आगणियै ठौड़
बैठी रैवती
घणा ई' हस-हस मखौल उडावता ।
एकली एकली अणमण होया
गेला पाळी चालती चालती
अचाणचक दिन रै सुपनै ज्यू जागता देखी,
बै चिरळावता आगळी देखावता बोल्या
देख देख ।
हणै ई सबदा रै छाय मळता-रगड़ता
रगील आरसियो बणावैला ।
उण माहि दीसैलो
एक ढोंगी कामणगारै रो निरत ।
धरम रो और एक बधण कस्या
उण नै चोखो कर्‌यो जाय सकतो ।
ईया होया
किण ई' दिन सबद आवाज़ करता हसता नी
हसता ई' ज
हिवड़ै दबाय मेलती
थिरगिच भारी पाथर ।

हूं अर कविता

काफिलै री वसी सुणता
अणन्त उजाळै रै ताण
नितरा जगावै जवाब ।
सूवता जागता
बिलाल री सुरीली अज़ान री आवाज़ ।
हज़ारू गरमी रै काड़ा स्यू
दिल री मुराद फळापण खातर जगावू
शहादत रै उजाळै रो चिराग ।
खाटी मीठी साध स्यू अनारदाणा रा
अगण - गिणगारी ख्वाब ।
सोनळियै रूपाळै सुपनै रै उजाळै
निराशी री मर्‌योड़ी आवाज़
कस्तूरी सोरम छितराय वायरियै
प्रशान्त उजाळै धाप रो इतर ।
सन्दल तेल वजू करणै मळता -
सितार रै सुरा धूजू थर-थर
हू गेला - गुम्योड़ो जुगनू ।

दिन रै उजाळै माय पधारज्यो ।

अधराता नी,
दिन रै उजाळै माय पधारज्यो
वतळ करूली था सागै ।
फूल घणा मुळकता वाता वतावैला ।
पगा रै सबदा, प्रकृति थिर नी रैवैली ।
दूर री बसी रा सुर सुण सकाला,
दोनूजणा ।
सारसा री लड, दिसा-अन्त ताई मिळ जावैली
म्हा दोना नै मुगध करता
समन्द री लै'रया माय-माय धूजणी छूवावैला ।
चिर-काळ, प्रीत-पछी ज्यू आपा एक सागै रैवाला ।
आज री ओळू रा सैनाण गुमावता गुमावता
पाछा घिर आवाला निवाया हाथ झाल्या ।
अधराता नी
दिन रै उजाळै माय पधारज्यो ।
परस - चकारियो फाड नाख 'र
आपस माय सुपना बदळा - बदळी कराला ।
अणगिण जळ-झरणा अर नीळो समदर
'शो-कस ' माय सजाय राखता
सई पूगण ठौड़ चिन्ता विना छाट लेवाला ।
लिछमी री सीवा छोड परा
और किण ई ठौड़ सिधावता सिधावता ई'
छितर्योड़ो विरमाण्ड
खुल्ली आख्या स्यू निरखाला ।

जद प्रीत द्यौला

थे जद म्हानै प्रीत द्यौला
हू दिरखत बण सकू हू ।
कागद रै एकलड़ै घर माहि आवळता छितराया
जागती काट सकू हू
विरखा भीज्योड़ी अमावस री रात ।
थे जाणौला नी वो माया रा इतियास ।
उदासी रो काळौ रथ
बहीर हुवैला सदै खातर ।

अळगी मुट्ठी माहि
समदर री लै'रया लिया
दिन-भोर रमावैला
इन्द्रजाळ री रम्मत
दुनैणा रै छानै आरसियै

थे जद म्हानै प्रीत द्यौला
हू अकास बण सकू हू ।
हू म्हारी मेघडली काया माय
गरब स्यू जगाय सकूली
कितरा ई लाखू जुगनू
अर ओळ्डी सुद्ध सुख ।

अणकईजनी पीड़

बौ दिन पाछो दे द्यो

थे रोही माहि पूठा सिधावौला ?
शाल पेडा रै जङ्गळ माहि परिया री फूठरी छिव तो कोरो ।
भवरा री अपवित्र लगोलग रम्मत, बिन पलक झपक्या तो निरखा ।
म्हारै उण दिन रो पलाश फूल पाछौ दीज्यो
जको थाने दियो हो एक सूरज ऊगती भोर वेळा माय
ईया नी हुवै तो तावडै री बळबळती अगण द्यो
म्हारै नैणा रो उजाळो बुझाय द्यो, गूगी बणाय द्यो ।
एक सगत शस्तर हाथा माय झलाय द्यूली अर
म्हारै अग-अग रा जाड तोड द्यो ।
हू तद झवरी नानेरी तर्‌या निरत देखावूली
हमती ऊपा रै सवारै
रूई-पीजारै रा हजारू निपुण हाव-भाव खोल्या ।
थे समदर पास पूठा सिधावाला ?
नदी-नाळै प्रीत री पुळ बाधज्यो
कवारी रा जागतो जळ-झरणो मोरो सोरो मळज्यो ।
म्हारो बी दिन रा मोती पाछो दीज्यो
जको दियो हो एक पवित्र सिझ्या नै ।
ईया नी हुव तो समदर री गरजती उफणती लै रया दीज्यो
म्हानै मौत दीज्या
छित्र बणाज्यो
एक क्स्योड़ो कैनवास हाथा माहि झलाय द्यूली -
म्हान कोणार्क रै शिल्प जुगरी यक्षिणी मूरत वणाज्यो
हू पताळ - रमणी वणूली
लारै नाख्योडी ज़मीन धक्योडी रणभाम ।

एक झीणो फाट्योडो सून्याडो

इर्णाधि लाम्या सास मत नाखा मेघनाद ।
तपोवन नी उजळताई गोधळी रो धवर
छट जावैलो मेनका रै दीस्या ।
तू कदास किण दिन मन-मन माहि
मेनका नै चावतो रयो हो पासै ?
औ भले ई' नी हुवै, मेनका थानै चावै ।
पैला रा ताता कटताई वा थास्यू मिळैली ।
वीरै नैडै आवताई, हिवडै री सन्दूक नै
छानैसी नाख दीज्यो ।
दूर राखताई
पैला एक झीणो फाट्योडो सून्याडो दीसैलो ।
पछै वो वड्डो होया रेलगाडी रै मारग
चालैलो घणी दूर
हिवडै माहि लुकाय राख्योडी प्रीतडली री रसोई जीमाज्यो
देह रा गरम गाभा दीज्यो
मेनका थारी दासी हुवैली ।
थारी न्याव रा पाळ खीच्या थानै
भू-मध्य सागर लेय जावैली ।
थानै हसावैली, रोवावैली
सैधा चितराम आवता नीद स्यू जगावैली ।
किण ई' दिन सुपना रो सौदौ कर्या घरा घिरता
सोळै क्रूस-कळावा माहि वीध्या अकाग्नीला देखावैली ।
धवर रो नकशो पटद्या
पेट तळै समाचार छाप्या
भोर रै जस गुच्छै री
फूठरी छिव कोरैली ।

ओळू छूयोडी माया

अधराता नीद टूटताई समझ नी सकी
कैडो उजाळो हू जगाई ही ।
पण ओ ई समझ सकी
ह्विडै रा सगळा अधार-विरथाऊ पौधा उपाड़ नाखती
उजाळै रा बीज बावती
नैणा रो उजास घणो ई' लाम्बो हुवै ।

अधराता नीद टूटताई समझ नी सकी
ठीक किण खुणै हू रई ।
पण इतरा समझ सकी,
अकास पाताळ घिरिया,
थक्योडै वटाऊ जैडी होया, घणी गेला चालती
पळकावतै आखरा निजरो नाव माण्डती,
अकास माटी रै बिचाळै
नाव घणै दिना रै जाय ।

अधराता नीद टूटताई समझ नी सकी
किण ठौड स्यू हू आई हू ।
फगत इतरो ई ज समझ सकी
हर एक आवण रै सागै रैवै सिधावण री प्रस्तुति ।
घणा लोग घणा - मोकळा उच्छब अर
थोडी क आसूड़ा री ढळकाण,
इण सिधावण रै अर पूठो नी आवण रै बिचाळै रै जाय
ओळू छूयोडी माया सुपनै रो गीरबो ।

थानै दे'य सकू

थानै द्यूली म्हारो ओळख्योडो
एक मुट्ठी अकास ।
अर द्यूली आखै दिन रै 'मैट्रो'' री अफीम
नीदडली सिगरेट रो पैकेट
शैहर रै मारगडै अणगिण धूडौ
बस माय चढती, धरा धिरती
जनवरी री सिझ्या वेळा
देह स्यू उतार द्यूली भीज्योडो कुरतौ ।
बस माय चढण स्यू पैली
हाथा माय झाल्योडो कश्मीरी शाल
अर द्यूली कितराई सौ छोटा मैगजिन ।
दो हीण्डता पुळ / सिन्दूर रो भरोसौ ।
सायत जुगनू अर एक कण्ठ 'सुमन '
कितरी ई' रुत, परदेसी बजार
अणछूयोडै दूधिया उजाळै न्हाया मस्जिद-मिन्दर ।
अणजाण मिनखा रा लुगाया जैडा केस ।
तैतीस क्रोड देवी देवता
कळकतै रो बादळवाई अकास
बमा रा सबद
अर गोरल काया रै जळ झरणै रो औसर-प्रस्ताव ।
ऐ थानै दे'य सकू ।

विसराज्यो मत ना

हू नार
जदैई नार री तर्‌या सरल विस्वासा
उल्का नै पडती देखी ही एक फागण री रात नै ।
सपेरै री बीन बजावण री मुदरा माय
अजताई चूवता टप टप पडै
माया भर्‌या सुपना नैणा माय ।
राखसडा जैडा तिलक-तिरपुण्ड कोर्‌या थे सगळा,
नी ठा,
दोनू हाथा नक्षत्र तारा उपाडता रैवो हो अकास स्यू ।
ठा है काई,
बो पैलडो उगाडो टाबर काई बोल्यो हो ?
बो 'कर्ण कुशल बणण नै मना कर्‌यो हो —
बी बात नै विसरायग्या ?
फगत विस्वास तोडो,
पलट नाखो हो मूरत —
भीत ऊपर चिपटी भर सिन्दूर रग राख्या
दो घड़ा जळ ढोळ्या हा
आत्मा री सायती री कामना खातर ।
जाणा काई, जलमदात्री नार
काई बोली ही ?
वा जकी निरसस रम्मत मना करी ही ।
बा बात ई मन माय राखो ई कोनी ?
फगत मसाण-जातरी होया
जमाय राखो हा मुड़दा रो पहाड ।

कोई छाण छिप नी है

सिधावण री बेळा नी है
सिधावण रा चाव ई नी है ।
आधी अधारी ठौड बैठी रैवू ।
रात गैरी हुया जीवण रा
घणा पाना ओळू री वाय स्यू
वैवता जाय ।
घणा वरत पाळती थका ई
निज नै देख नी सकू ।
कोई छाण-छिप साधन सम्वळ नी है
पण कितरी दूर ताई छानै-छानै
वाय दूर बैवती जाय ।
उडीकतो रैवै नी कोई
शौकीनाई रो कोड
का चक्का रै घूमण स्यू
का हेत कोड रै चौकोर - फ्रेम माय
सूगली वाय स्यू अकास धूवाळो हुवै
सोळै कळावा पसवाडो फोरती रैवै विछाणै
कोई तारै स्यू हेलो नी मारै ।
एक र हेलो दिया एक सागै घणा
अपराजिता फूल खिल जावता ।
चितराम री मजूरी लिया, घणा नैड़ै
रैवतो समै ।
सूनै चकारियै माहि हुवता
कुवेळ्या रा फूल अर
मुगत मन रा पखीड़ा ।

ओ किण मारगडै चाल्यो है ।

वै वड्योडा रैवै निजरी कचुळी माय
सवदा री मिरच्या छिमक'र वगार देंवता
लगोलग बिरखा बरसताई
खोट री कटोरी माय
चिणसी' ई गळै कोनी धमण्ड री बरफ ।
इण माय कोई अन्याय दीसै कोनी ।
इण माय कोई अपमान नी है ।
इण माय कोई खतरो नी है ।
औई ज सनातनी ऊभो रैवणो ।
औई'ज छानै-मारगडै हिवड़ै रो मौत परणीजणो ।
अधारै री छिया सिरकावता, अणजाणी छिया-मूरत
गैराई स्यू कान लगाया,
कण्ठ नाड छिन्न कर्या तारा रो रोणो कळपणो ।
टाबर रै सैहजपणै नैडै
नैराज्य री ललित-कळा ।
धरम रा दगा बम फोडाय
अर काच रै पडदै माहि देह रो सौदो
सुद्ध फूटरापै री कुमौत हुवता थका बोलूली
इण माय कैडोई' अन्याय नी दीसै ।
इण माय कैडोई' अपमान नी है ।
इण माय कैडोई खतरो नी है ।
औई ज सनातनी ऊभो रैवणो ।
आई'ज छानै मारगडै हिवडै रो मौत परणीजणो ।

ईसकै री ओट माय

आज री तर्‌या ऐड़ी'ज एक रात नै
एक जणो पासै हो ।
उण रै अग-अग माय ही घणी वासना री गन्ध
वस का ट्राम माय नी
रात री रेलगाडी रै कमरै माय ।
उण माय कैड़ी ई' प्रीत नी ही,
बत्तीस बसन्त पार करता जीवण रो सूगळो इतियास ।
थोडो'क ध्यान नी रेवतो
पड जावतो माथै रो मुगट ।
पगा वाजता घूघर रा सवद
खुल्ली गेला ऊभताई सगळा जणा
हाथा ताळ्या बजावता ।
बी मुहूरत ने मुट्ठी माय झाल्या
घणी बार ऊपर उछाळ'र बोचू हू अजताई ।
बैरी का मितर, घरा का बारै
एक छिन रो सूगळो जळ
म्हारै अग छिडकाय
कवळो करणो चायो हो निजरो सोपान ।
उण ई'ज मुहूरत नै मुट्ठी माय झाल्या,
बाळ नाख्यो है
बाजतै सितार कानी ।
बोई' सितार रा सवद सुणता सुणता
टुकडा टुकडा खिण्ड्यो है मन ।
टूटग्यो है अग-अग ।
इणबिध काई टुकडा कर सकै
अरदास करती पूजारण रो समार ?

आवरण री ओट माहि (तसलीमा न___

हू ऐडा घणाइ जणा नै ओळखू हू
जका क्दैई दूखतै माथै री बळण स्यू
कोढ-घाव नै ढकण सारू टोपी पैरै कोनी ।
एक बौत बड्डै अर पुराणै दिरखत रो
नकारियो घेर्‌योडो हो
ईयाकळो ई' थोडो क घाव आळो माथो हो ।
इतरा दिन बी रै भाग माय पाती आया हा
सगळा सुख अर भोगतै दिरखत रा फळ ।
पूरब देसा री छोरी नै *अचाणचक मिळ्यो* एक *ज्ञानी-दिरखत*
बी ई पत्तै रै लिख मेली नरक रो लाजा मरतो, इतियास रो
चिमक धूजै पचास इजार मौत रै तीरा स्यू
कूट-कूट र पीसणा चावै बी री खरी उमर,
कितराई' घाव आळा कुतडा नै उकसाया
आप आपरो नुकसाण ढकै बचाव रै नादरै स्यू ।
मनस्या हुवै *पिरथी री मगळी लुगाया*
एक जुट भेळी हुय र मार नाखा
सगळाई' घाव'आळा कुतडा रा माथा ।
मनस्या हुवै देखू अधारा-काळा-कस,
धाळौ पडदौ सगळा फरक करतो
माथो भेळ्या उतर जाय वदवू रो पुज अर
सूगळै लोइ री धार ।
मनस्या हुवै सुणू लक्ष्य भ्रष्ट शिकारी री तड्या
म्हा जण्या ज्यूई कैणै री पाळणा करता
बोकाड़ा फाड़ बिलखता
दोनू गोडा निगाळै माथा गालता —
रिथाउ रोणो गाणो ।

कुण सो छाट ल्यू

नाटक अन्त होया
समदर रै जळ माहि उतरणो पडैला
हेताळू जणा खातर माप-तोल'र दैणो पडैला
बारी पाती रो जळ ।
इण पछै त्यारी कर लेय' चालणो पडैला दूर मारगडै
जितरी देर ताई सातू समन्द नी सूखै
बादळिया हीण्डैला अकासा ।
उण स्यू ई' घणो दवता थका प्रीत मिळैली
अर हुय सकै, सभ्य द्वीप माहि भगोडा ।
सोच्या मिळै कोनी, कोई भूमिका ले' ल्यू
बीज रो तळो खाली राख द्यू ?
ना कै सगळै हाड-मास नै झुळमाय
सभ्य द्वीप रो कर्मठ बाशिन्दो होवू ?
समकोण मिलाय बराबर होया अगण छूय सकै ।
अहकार माहि बळ उठ्यो नी जाय ।
ऐडा समाचार सुणीजै रोज रोज जीवण माय ।
दूर मारगडै चालती चालती
कदै निजनै अगण हुवती देखू ।
सूवतो अध्याय काट्या अगण स्यू देखती
सवाला री चोट स्यू घायल होय पडू ।
मायनै रा काळ-कटकडा चिरळावता बोलै —
झूठ-झूठ ।
अजकाल
साची-खरी लुगाया नितराई अगण होया बळै है ।

आवरण री ओट माहि (तसलीमा नसरीन)

टू ऐडा घणाई जणा नै ओळखू टू
जका कदेई दूखतै माथै री वळण स्यू
कोढ-धाव नै ढकण सारू टोपी पैरै कोनी ।
एक बौत वड्डै अर पुराणै दिरखत रो
चर्कारियो घेर्‌योडो हो,
ईयाक्ळो ई थोडो क घाव आळो माथो हो ।
इतरा दिन बी रै भाग माय पाती आया हा
सगळा सुख अर भोगतै दिरखत रा फळ ।
पूरब देसा री छोरी नै अचाणचक मिळ्यो एक ज्ञानी दिरखत रो पत्तो
बी ई' पत्तै रै लिख मेली नरक रो लाजा मरतो, इतियास गे लेखो-जोखो ।
चिमक धूजै पचास इजार मौत रै तीरा स्यू
कूट-कूट र पीसणा चावै बी री खरी उमर
कितराई घाव आळा कुतडा नै उकसाया
आप आपरो नुकसाण ढकै बचाव रै चादरै स्यू ।
मनस्या हुवै पिरथी री सगळी लुगाया
एक जुट भेळी हुय र मार नाखा
सगळाई घाव आळा कुतडा रा माथा ।
मनस्या हुवै देखू अधारा काळा-केस
धौळा पडदौ सगळो फरक करतो
माथो भेळ्या उतर जाय बदबू रो पुज अर
सूगळै लोई री धार ।
मनस्या हुवै सुणू लक्ष्य भ्रष्ट शिकारी री तर्‌या
म्हा जण्या ज्यूई कैणै री पाळणा करता
बोकाड़ा फाड़ बिलखता
दानू गोडा बिचाळै माथो घालता —
निरथाउ रोणो धोणो ।

कुण सो छाट ल्यू

नाटक अन्त होया
समदर रै जळ माहि उतरणो पडैला
हेताळू जणा खातर माप-तोल'र दैणो पडैला
बारी पाती रो जळ ।
इण पछै त्यारी कर लेय चालणो पडैला दूर मारगडै
जितरी देर ताई सातू समन्द नी सूखै
बादळिया हीण्डैला अकासा ।
उण स्यू ई घणो दवता थका प्रीत मिळैली
अर हुय सकै सभ्य द्वीप माहि भगोडा ।
सोच्या मिळै कोनी कोई भूमिका ले' ल्यू
बीज रो तळो खाली राख द्यू ?
ना कै सगळै हाड-मास नै झुळम्माय
सभ्य द्वीप रो कर्मठ बाशिन्दो होवू ?
समकोण मिलाय बराबर होया अगण छूय सकै ।
अहकार माहि बळ उठ्यो नी जाय ।
ऐडा समाचार सुणीजै रोज रोज जीवण माय ।
दूर मारगडै चालती चालती
कदै निजनै अगण हुवती देखू ।
सूवतो अध्याय काट्या अगण स्यू देखती
सवाला री चोट स्यू घायल होय पडू ।
मायनै रा काळ-कटकडा चिरळावता बोलै —
झूठ झूठ ।
अजकाल
साची खरी लुगाया नितराई अगण होया बळै है ।

थाए सोच्यो हो

सोच्या हा, मूरत बणाय राखाला
खोट अर नीदडली रा मन्तर पढिया ।
एक एक करता नीदडली टूटता देखता
विस्वास गुमावो हो बेळा री चोटा स्यू ।
उजाळै री सभ्यता रै वैवतै झरणै
हौळै हौळै अकास जागै
जागती मूरत्या रै हिवडै —
बी ई जागतै पळका मारतै अकासा ।
इण वार,
आपैई मूरत वण रया हो गूगै इचरज स्यू ?
और लारै सिरकाया राखीजौला नी जदैई'
आय धमको हो सामी जुद्ध रै ।
देख्यो जासी कुण मरै, कुण जे बचै ।
जुद्ध जीतण सारू हाथ-ताळ्या
किण खातर उठावो हो बजावण नै ?
हर एक दिन इतियास, जिण तरया वदळ रयो है
पुराणी कथावा काण्या वदळ पर्‌या
सत् री नार - मूरत्या
वी ई' ज ठौड़ जग्या ले'य रई है ।

माटी री लुगाई

पिरथी री माटी नै देखावणो पडैला
विद्रोह री अगण कन्यावा
किणविध अकास
टूटतो तारो होया दौड़ै माटी रै खीचाण
लोई देवण सारू ।
दूर रो अगण-गोळो सूरज नै देखावणो पडैला ।
मायडपणै रै गौरव रा सैनाण
किणविध देह री तपण मेल्या
भ्रूण स्यू मिनख घडै
विश्वविजय री प्रेरणा देवण सारू ।
रात रै चांदै नै देखावणो पड़ैला
खरी लुगाया
किणविध कवळी प्रीतडली रै उजाळै माय
सुपना रो ससार सजावै —
जुद्ध नी
सायती देवण सारू ।

माचै स्यू समाधि री गेला

एकलै पाणी रै कूवै ढीलै हाथा
जीवण रा नितराम ओळख्या, ऊभा रैवता थका
राता छिमा करै कोनी कदैई
कि ण रै पगा रा सबद मिळता, चिमक'र
घिरता ताकता
हिवडै बिचाळै घोडा दौडै
करडा-काठा सबद घोळाया
सूनाडै नै धूजाय ।
निजरी छानी शिक्षा स्यू
बार-बार लागै आखो जीवण
हजारू रग री रम्मत घालै,
कितरी ई थकू क्यूनी पण
नश्वर-काया खीन्न अन्त बेळा कानी ।
सिधावणो पडैलो माचै स्यू
समाधि री गेला।।

इणठौड सगळाई एकला

माथै रै ऊपरा चानणी रो चदरो
विदामी पूनम रै चादै री माया ।
उजळी-बिरखा रै खोळै झिरमिर वरसती बीनण री तर्‌या
भीजगी है रात - रमणी ।
इण वेळा ई' म्हारो आपरो कोई ई भीडी नी हो ।
अधराता नीदडली टूटै, झरोखै पागै जावू,
हाथ वधावू,
अधारो फुम्फुसाया बोलै
नी है । नी है । भीडी नी है म्हारै ई —
इणविध सोच्या कोई जी सकै जाणताई
हू परम वैष्णवता पाळती रई जदैई ।
बी वेळा ई' नैणा सामी हजारू जाळ्या झरोखा भाग्या
दीस्या अेकलो अेक मेघडलो ।
इणठौड सगळाई एकला ।
चादो अेकलो, हरएक रात एकली आवै सिधावै ।
दिन रै हिवडै, लाखृ क्रोडू कूकारोळी मण्डै
सीख री बेळा अेकलाई घिर आवै दिन ।
कोई उण रो मगी - साथी नी है ।
फगत अकासा एकलो सूरज ऊगै ।
रात रा तारा भीड़ी बणण री आस लिया
एक - दूजै नै टिमटिमावता निरखै ।
मायड टावर नै चूगाया पछै
अेकली समशाण सिधावै ।

माचै स्यू समाधि री गेला

एकलै पाणी रै कूवै ढीलै हाथा
जीवण रा चितराम आळख्या, ऊभा रैवता थका
राता छिमा करै कोनी कदैई
कि ण रै पगा रा सबद मिळता, चिमक'र
घिरता ताकता
हिवडै विचाळै धाडा दौडै,
करडा-काठा सबद घोळाया
सूनाडै नै धूजाय ।
निजरी छानी शिक्षा स्यू
बार बार लागै आखो जीवण
हजारू रग री रम्मत घालै
कितरी ई' थकू क्यूनी पण
नश्वर-काया खीरै अन्त वेळा कानी ।
सिधावणो पडैलो माचै स्यू
समाधि री गेला ।

म्हारो एकायत उच्छव

म्हानै छानैसी जागती रैवणद्यो रातरी एकायत ठौड,
वेळा बचावती पीड़ रो सुख लेवण द्यो ।
कोई बुलावो मिळताई
साज़ रै ताल चालती
रिमोट कन्ट्रोल ताणै हुसियारी स्यू पग राखती ।
म्हानै रैवण द्यो ड्रेसिंग टेबल रै सामी
यज्ञ री त्यारी करण सारू ।
अधारै रो अविस्वास
देह स्यू कुसुम-चामड़ी छीलाय
देखाया है कितराई' डरावणा सैण ।
दिन ढळताई', एक धाव री
पीठ ऊपर लाता खावती
गरब स्यू माथौ ऊचौ करू —
बरगद रै दिरखत री तर्‌या ।
आखी रात जागती
बत्तीस वसन्त इणबिध
हिवडै रा गुलाब खिलावती,
त्यारी करू हू
एकायत उच्छव री ।

निज री ओळखाण

बै हर बगत बोलै
काळा काळा राजहसडा ई ज
सोनळिया अण्डा देवै ।
जदैई अजकाळै सोचती सीखी हू
सूरज री कुमौत होवती थका
सोनै री कमी नी रैवैली किण ई' दिन ।

किणई बगत अधराता नीद टूट जाय
दोपारै रै न्हावण पछै भूख लागै
अखबार माय बाचू नार बावत घटना ।
आ ज्यू इचरज सरल रचना ।
इण ई तर्‌या, निजरी ओळखाण रो अन्त हुवता
आरसियै मुखडो निरखणो ।
उण पछै निजरी छिया सावट परी राखती
सवारै पछीडा रै मुखडै सुणू
अगण रो नतीजो ।

म्हारो एकायत उच्छव

म्हानै छानैसी जागती रैवणद्यो, रातरी एकायत ठौड,
वेळा बचावती पीड रो सुख लेवण द्यो ।
कोई बुलावो मिळताई
साज़ रै ताल चालती
रिमोट कन्ट्रोल ताणै हुसियारी स्यू पग राखती ।
म्हानै रैवण द्यो ड्रसिग टवल रै सामी
यज्ञ री त्यारी करण सारू ।
अधारै रो अविस्वास
देह स्यू कुसुम चामड़ी छोलाय
देखाया है कितराइ' डरावणा सैण ।
दिन ढळताई , एक धाव री
पीठ ऊपर लाता खावती
गरव स्यू माथौ ऊचौ करू —
बरगद रै दिरखत री तर्‌या ।
आखी रात जागती
बत्तीस बसन्त इणविध
हिवडै रा गुलाव खिलावती
त्यारी करू हू
एकायत उच्छव री ।

सरलता रै धौळै कागद ऊपर

हू किण नै ई त्रिप नी द्यूली
औ म्हा खातर रैवण द्यो ।
सगळा नै म्हारै कानी तिरछी निजरा स्यू ताकण द्यो
हू बळबळतै खीरा स्यू सबद-लड खिण्डाय'र
जगाय राखूली बा सगळा री अगण री रीस ।
वै घिरणा री चोट स्यू
म्हानै कमजोर बणावैला तो
हू सृष्टि री सेज सूवूली निज इच्छा स्यू ।
अर उण ई पीड रै स्याम - उजाळै
वेदना रा जळ-मोतीडा भेळा कर्‌या
घड द्यूली दुखडै रो समन्द ।
वी ई' उछाछळै समन्दा
लाल नीळा कमळ खिलावती
वधाय द्यूली घिरणा रै नैणा री जोत ।
हू किण नै इ घिरणा नी द्यूली
सगळाई म्हानै दीज्या ।
हू वी ई घिरणा नै छानै-छानै भेळी कर राखूली
आळ री दराज़ माय ।
म्हारी सुद्ध जड़ामूल उपाडीजता
हिवडौ घुळैलो अकासा
देह रळमिळैली माटी माहि ।
म्हारा भविष्य पाड़ोसीड़ा
थाड़ो क मिळणै री आस स्यू
छानी दराज़ नै खालताई दख सकैला
सत् रै पवित्र धौळै कागदा
सरलता रै उणियारै ढकियाड़ी
किरी पित्र जम्याड़ी है ।

सुद्ध प्रेम

बिरखा री अधराता गुलदाउदी फूल खिलै कोनी ।
टोपो टोपो होया हीण्डतो रैवै ऊतावळो सवाल ।
बिन जाण्या, सौभाग रो देस निकाळो मिळता
एक ई' छिब नी बैवैली धरणी - नैणा माय ।
सौभाग रो किवाड खुल्लो दीस्या
और घणाई' बरसा जी सकाला ।
इण पछै ई' लेवणी पडैली
लारलै जलम री सौगन ।
इण बिचाळै ठाठ-बाठ स्यू जीवणो
तौई पण बिन काया रो ।
मेळो खिण्डताई, प्रेम सुद्ध हावतो
चरित्र री नदी माय लै'र्‌या नी उफणाय ।
हौळै बैवती ओळू नै छानी-सन्दूक माय भर र
रुत रै खता
पवित्रता रो आपसरो समझौतै रो अन्त होया
बिरथाऊ बीज रै सन्धाण ताणै फिरता-भटकता
कुबेळा खिण्डाया, गुमावणो नी पडैलो
भेळो कर्‌योडो
रूप अर सत् रो ढिगळो ।

थे जिण तर्‌या ई' चावो

जे एक आखी पिरथी री माग करू ?
ज घडनी चावू एक छिन री दोस्ती ?
जाणू दे नी सकौला ।
था लोगा रो हिवडा दराज हुवता थका
मायनै सकडो ई' है ।
एक दिन रो तावडो
निजगे कर्‌या चावता ई
आख्या रै खुणै 'रक्त गुलाव ' दीसैलो
अर जगत माहि छितराय राखैला
नीळी अगण ।
किण ई' आशका रो स्विच
नी जाणतै हाथा पडताई
जग जावैलो धू धू करतो ।
जगाया वाळ्या राख कर्‌या
दूजै दिन घडैलो निजरो उणियारो
वीया ई
थे जिण तर्‌या ई' चावो ।

प्रीतम सबद रो ज्वार उफणाया

घणी सजीव बाता म्हारै हिवडै रै
छोटै किनारै खिल्योडी है ।
हाथ घालताई भर जावैलो हाथ ।
एक बार अणमणी नदी हुया कमळ री
सोरम मिळैली ।
बिरखा री आस लिया जावतो फिरै एक सगो-साथी
आदम कूकारोळी काया मळिया
हाथ री मुट्ठी माय कितरा पळ झाल राखोला समै नै ?
दोपारो वैवताई उजाळै रो नुकसाण हुवैला ।
जागती रैवूली कितरा दिन ?
इच्छा-फळ री भावना खतम होवता
समझौला समै गुमग्यो है
हाथ री तेडा स्यू ।
उजाड-खेता नै डूबाया
प्रीतम सबद रो ज्वार उफणाया
भर जावैलो बिरखा रो डूबणो ।
बिरखा घणी देर स्यू बरसती ई'
कादै रै जळ स्यू धोय ल्यूली आधा-नैण
जीवण रा घाव अर समै रो नुकसाण ।

हिवडै लैर्‌या धुळाता

इण गवारै मन खारा करणा नी है ।
थाड़ी प्रीत री माटी माहि
पग राखता ई' ज
करडी माटी मिळैव्हाई मिळैला ।
विस्वास रै किवाड़ा नै नीव स्यू खड़ी करिया
हिवड़ै री अञ्जळि मिळैला
ज्यू आपा सगव्हाई' नावा ।
मुट्टी रा पलाश फूल खिण्डता ई
मिळैली एक गुच्छा अधरातइली ।
थारी जेब माहि अकास नी है
थारै हिवड़ै माय समदर री लैर्‌या ।
थारै हिवड़ै हळदी वरणो उजास
थारै हिवड़ै सुपना रा जुगनू -
एक टोपा करड़ो उजास मिळताई
वण सकै सूरज ।
दूर रो ईश्वर हिवड़ै री पूजा चावै
दो हाथा स्यू खोल्या झालीझैला नी हिवड़ै रो किवाड़ ।
हू तो मिनख जूण,
पूनम री कक्ष छोड्या
उड सकू हू ।
का वण सकू हू सतमुखी नदी
ईया बोल्या तपस्विणी बण सकू नी ।

दूजी दीठ

थारै सागै नितरा, सागै चालतै जातरी री तर्‌या
जळ री उफणती दहाडा स्यू, सबदा री धुन घडती
दिन-रात छिब लिया रम्मू ।
छानी सन्दूक माय ओळख्योडै सुरा ने खेचल करती फोरू ।
काच रै पडदै माहि देखू असुभ समाचार ।
आशका री धुधळी डाळ ऊपर बैठो
निर्वळ एक डर्‌योडो कबूतर
बराबर ताल मिलावतो गावतो हो स्राप रा सुर ।
तळाब रै आरसियै बिरखा री छाट्या स्यू
जद हीण्डा खाय रयो हो अकास,
अचाणचक जीवण रो मरम समझता
फुटपाथ रै थोडै' क टाबरा नै बुलावता
उपहार दवता, नाखू प्रागैतिहासिक
डायनासोर री पळका मारती छिब ।
समझ सकू थारै सागै अन्तरमन होय रैवता
शहर नै थोडो'क दूषण-मुगत राखण री दरकार है ।
फुटपाथ रो धूवो, कळासी, हाण्डीरा खिण्ड्योडा चावळ
वस म, ट्राम म हाथ छिटकावता टाबर कण्ठा-ओले । ओले ।
सूनै कमरै काच रै पडदा माय
थारै सागै नितरा चालतै जातरी री तर्‌या
मन रै कैनवास माय भाप जमाय राखता
विज्ञापन रो गरब देखू —
'सुन्दरबन जङ्गळ रै हष्ठ पुष्ठ बाघ री
जीवती छिब ।

अमरत्व रो सुपनो

जिण बेळा म्हारी ऐई ज खाली हथेळ्या
मगतण री पइसा गिणण री मुदरा लिया मागती
ऊपर नीचै हालै,
उण ई'ज बेळा ओळू आवै म्हारै आप रै प्रीतम स्यू
एक लाल पक्योडी ईटा विछ्योडो मारग चायी ही ।
वो म्हानै सिहासण ऊपर बैठाय
पगा नैडै मोकळी सौनै री अशरफ्या रो थाळ राख्या
म्हानै मन्तर-जाळ स्यू बाधग्यो ।
बठै स्यू इ बारै रै उजाळै कानी निजर राख्या
साकळ रै जरजर बिस माय छटपटावती रयी घणा दिन ।
छेकड थक परी अधारै घरा बैठ
सिरजी हू उजाळै री जोत ।
इण बगत हर दिन घरा बारै म्हारो उजाळै रो उच्छब
सामी पड्यो है सीवा बीहूणो पक्योडी ईटा बिछ्योडो मारग ।
बी मारगडै इण घडी चाल नी सकू
बेळा बीततै नकशै नै देख्या ।
जदैई मारग रै दोनू सारै
घणै जुगा री लता-बेलड्या माटी माय लूसाया
खुशहाली रै उच्छब माय पखीडा रा गीत स्यू
फूला री मीठी सोरम बायिरयै री तान
बड्डो किवाड पिरथी रो दरवाजो खोल्या
चुपचाप निरखू अमरत्व रो सुपनो ।

सोग

घणी बाता सीखी नी अजताई
माया-मुगत भापा रै लेखै जोखै री वई चोखी तर्‌या
समझण सारू
एक घर स्यू दूजै घर आवणो-जावणो छोडण री
बाता सीखताई बिसरगी ।
सुर सुणताई बोदैड़ै नेम नै थोड़ो' क बदळ परी
अधारी-आधी नहर-नाळी माय
बैवाय द्‌यू डूगी ।
किया ई' दीसै कोनी
अकासा घणा तारा जागता थकाई —
अधारी राता भविष्य पिरथी
अजताई गैरी अधारी ।
ईयाळको सगळो सोचती बैठ्‌या
सगळा ई' सोग बोलै ।
तौई तारा हर छिन सोगरी अकास-गङ्गा माहि
चालता-फिरता रैवै ।
कलाकार री कोरणी स्यू माण्ड राखै
निजरी ई ज सोग मनावती छिब ।
गोधळी वेळा माय देह नै बाट्‌या
खुद ई ज बणाय सजावै
कुबेळा री अरथी ।

पाथर घड्योडी मूरत नी हू

अधार रो रहस्य जाणण सारू घणी खेचल करती
बळीतो जगाया
हरखावती चिन्ता स्यू आकळ-बाकळ हुया
जगायो हो उडीक रो दिवलो ।
जदैई तो पाथर घड्योडी मूरत नी हू ।
एक साफ-सुथरो सुख चावता थका
बायरियै री परता अनशन मण्डाय ।
इण कारण हू और किणई दिन अरदास करी नी ।
घणी कल्पनावा उखणती रोवट-दौड सीखी ।
एकली एकली पाळी चालती रैवती ही
घणा री रूस्योडी दीठ ही ओट माय ।
तौई पण वै चावता थका देखै नी अजकाल —
शहर माय कितरी बरफ पडै
भीज जाय दिरखतडा, पैरण रा गाभा
देवता री सूण्ड चढ्या
घणाई ऊपर चढग्या दूध रै बजारा
नूवै रग स्यू सूरज कोरण रै मुहूरत माय
प्रचण्ड सबदा स्यू भागै अकास-चूमता घर ।
सिरजण रो बिरथाऊ नुकसाण कर्‌या
पडी रैवै बासी छाय ।
इतरो असमजस, इतरी लडत,
इतरो साप दिवडै उखण्या
क्यू और घणी रूस्योडी दीठ ?
आदिम मिनख नै बारै नाख'र
करड़ी-ऋजु देह नै कूट ढोक र
घणा ई' गरब भर सीखी
अजकाल री रोवोट-दौड़ ।

क्यूं दूर सिधावणो चावू

माथै ऊपर डागळो
डागळै ऊपर गायव आभो,
नैणा री सीवा ताय
हरियाळी हाथा स्यू सैण दिया बुलावै
जदैई दूर सिधावणो चावू ।

आपा रै हिवड़ै थोडा'क पाथर
पाथर माहि गैरो अधार
हिवडै माय उजाळो अर वाय मेळण सारू
जदैई दूर सिधावणो चावू ।

आपा रै तावड़ियै-बध्योडी हसी
हसी माय करडा पौरा
विन्यास री भाषा ओळखाण मारू
जदैई दूर सिधावणो चावू ।

सवारै सूरज ऊगण पछै खोलै
पिरथी रा किवाड़
जीवण री बई रा पाना भरण खातर
जदैई दूर सिधावणो चावू ।

और एक सुरग खातर

एक अकास-नीद नैणा माय लिया
जागती बैठी हू ।
म्हानै लैण'सर ऊभण नै बोलै
म्हारो प्रीतम बो जको सिधाय चाल्यो
कर्ण री तर्‌या अणसैवती पीड घोळाय
अजताई सागै कर्‌या चाली हू कुरू वशा ।
कमळ-रोही माहि पाथर खिल्‌या है देखताई
जाण परी विष पीवू हू ।
एक जलम माय मळूनी काळख समझ्या
भर-दौपारै ई ठण्डक लिपटाई काया नै
कळेवो सुख-परस राख कर्‌या जे सुरग मिळै
और एक जलम माहि ।
नैण घुळ्‌या ललासी
थक्योडी-टूट्योड़ी देह
माटी माय जडा ठसाय
पात्या माय छितराय राखू अणसमझ भापा ।
अजकाल रै शुक पखीडा कन्नै स्यू जाण ल्यू हू
मुखर पिरथी रा हालचाल ।
अर मारग ओळखाण खातर
हिवडै ठसाय राखू
जागती मशाळ रो उजाळौ ।

उडीक

मुखड़ै एक आरसियो है
देह-मनड़ै कैड़ीई' चोट लागताई
जखम खिलजाय मुखड़ै रै आरसियै ।
ऐडो जद कदैई' हुवै
उण वगत आखी देह माय सरू हुय जाय
रैगळ वाळा साप-काटा रै डक स्यू रडकीजणो ।
अर मनस्या रै अकासा तारा खिलावता खिलावता
थक जाय 'विवेक रो वजार ।
ओज्यू किण ई' दिन हिवडो छेद्या,
सूरज किरण्या नै देखण री आस लिया,
पाळी पाळी चालू गेला-घाटा
लाखू बरसा री कळपती अरदास करतै हिवडै
अजताई च्यारूमेर गैरो अधार,
गेला विचाळै थम्योडो 'यान्त्रिक' अजकाल
धूजतो ई ऊभो रैवै,
सामी सगति सामै लाचार ।
मुखडै री बडाई लिया ऊभणा
मन मैल रो दोरो मारग ।
नकळी भवा री पुतळ्या माय
माया री प्रीत पोवती राखू
ज्यू कुवेळा माय
सिझ्या नै उडीकतो रैवणो ।

दो नैणा स्यू म्हे तावडो देख्यो है

साफ साफ बोलणाई ज चोखो ।
म्हारा दोनू हाथ नदी नै छूया है ।
धान रै खेता रै नैड़ै नी
सगत भीता रै बिचाळै ।
म्हारा दोनू नैणा तावडै नै धोया है ।
इण सइकै री सरूआत री घोषणा-काळ ई
म्हारै सुख रा सगळा सन्धि पत्र लिखीज्योडा रया है ।
आखै दिनरात लकडी री पुळ ऊपर ऊभी रवू
बायरियो पौरो देवै हिवडै
म्हारै च्यारूमेर बिस री लता-वेलड्या बधगी है
अर लारै धवर रो धूवो —
तौई म्हारा दोनू हाथ नदी नै छूया है —
थकाण रै जुग नै पार कर्या, नूवी एक गत रै खीचाण ।
इण बार सङ्खध्वनि अर मङ्गळ-घट डूब्या है गुडिया जीवण ।
नदी, इण बगत वैवण रो भारो तो ल्यो,
नदी, इण बगत खरच रो भारो तो ल्यो ।
म्हानै नदी सगम माहि रळमिळण नै जावणद्यो ।
म्हारी डाळ्या रो सानळियो फळ रम्मैलो
लै र्या मण्डातै समन्दा जळ ।
अधारै अर हरै पन्ना हिवडै म्हारै
गूगी दीठ स्यू सबद-बिना सावळ करी हू
दुखडै रो पीवण जोगो पाणी अर पीड रो भोजन
किण रो ई मुखड़ो हू नी निरखूली समझ्या
समन्द सारै कितरी राता जागती रैई ।
नदी री कन्या नदी रै मिनख
बिचाळै भावना म्हारी ।

समदर गिरजडो रैवै है, जाणती थका
लै'र्‌या कूट ठोक'र, माटी री सोरम
सगळी झोळी माहि रैयगी है —
कितरी अधार गळिया रै वळवळतै नैणा ।
डूबण खातर जळ है अर मारगड़ै जम्योड़ो पाणी है
तौई हू दो हाथा स्यू नदी नै छूयी हू
दो नैणा स्यू हू तावडै रै उजास नै देखी हू ।



इण बार ओळखूली निजनै

हू इण बार निजनै ओळखूली ।
शिल्पी रा सगळा घड्योडा सबद
हाथ स्यू तोड्या
निजनै ओळखूली ।
सगळी तितल्या री रग्योड़ी पाख्या
फाड्या फाड्या
वायरियै बारूद री गन्ध छितराया
थोड़ौ थोडौ कर्‌या
निजनै ओळखूली ।
बारीक कळा री कारीगरी रो कळसो
बाथरूम माहि सजाया
अकासा उल्लू री पाख्या दो मुट्ठी उडाया
हू ओळखणी चावू निजनै ।

माया मिन्दर रै तळ-भवरै

वखाण थमताई पाथर-भोम ऊपर छिया रो दाग ।
काठीज्योडी आगळ्या स्यू आकन्द फूल
अर प्यारी नदी नै छूवताई
समझौतै रो चश्मो पैर लेवै ।
इणविध काटै है नार तळै दवती घणाई' जुग ।
इतरो मोक्ळो कपट-छळनावो ।
लाम्बै समै स्यू काया नै नदी माय मळता मळता
तौई' पण सूनी एक जळधार ।
अधारी निसरणी चढता, वैवतो चूवै हार्योड़ै नैणा रो रग ।
बिचाळै छितर्योडा रैवता अणगिण बेमेळ सबद भेळा कर्या,
कैणै री पाळणा करती डूगी रा पाळ खीच्या
बिन सबदा पूगाय दै काळै पडदै री ओट माय ।
इण जग्या ई' सगळा चितराम रो अन्त नी है
माया मिन्दर रै तळ-भवरै माहि सायत मूरत
वश बधावण छोरा जणती जणती,
अण-उपजाऊ हावती
बदळ जाय ख़याली-खेती री ज़मीन ज्यू ।
धू धू बळती रेत माय
हरियाळी रै हाथा रो सैण रैवै कानी ।
दिन ढळिया पछीडा टापरै घिरै कोनी ।
मोमाख्या गीत गाय पर्या
तळै दब्योडी नार्या
फूल हुया खिलताई थका
ताज़ी नी रै सकै ।
घणी ई भोर माय झड जाय
सूरज ऊगण स्यू पैला ।

स्वीकारोक्ति

आपा रै भोजन सबद रै बिचाळै
दो पूनम रा चादडला उसणाया राखू ।
अर आखै दिन भटकती-फिरती
बायरियै रो रग जावू ।
सीवा रा सैलाण समझण सारू
सहाय री वाता सोच्या
भाषा वीहूणै मूण्ढै लिख द्यू
भूख री गरबीली सगति ।
सौ - सौ अभावा रै बिचाळै ई सायत रई' हू ।
अन्त बीहूणै पाथर रै भारै अर सनेह रै अधिकारा
आई ज म्हारी 'स्वीकारोक्ति' ।
जिण वगत खाडै रै सारै ऊभ्या
सोनळियो मिरदङ्ग बजावैलो म्मै
प्यारा हाथ मुखडा घणाई' अणजाणा लागैला
तौई पण बैई' हाथ मुखडा और घणा प्यारा होवै
समझ सको काई प्रीतम ?
भाषा-बीहूणी भूख रै मूण्ढै ठावस लिख्या
फगत भूख री गरबीली सगति उखण्या,
रग रै ज्वार भाटै,
नाटका रै बजारा
और कितरा दिन बच' र जी सका ?

सूरज रै टूट पडण रो सवद

कितरे काळ रेई सम री गुडकण सह्या
मात रै अणूतै दाता स्यू बचावण नै
मिनख नाव रै विचित्र प्राण्या नै ।
नी ठा आ दायित्व पाळण कर रई हू कद स्यू
कद म्हारी नीदडली माय सूरज रै टूट-पडण री पीड
होई ही ह्विडे ।
उण बगत स्यू ई' म्हारी छानी नीद,
माण्ड्याडी सई लिया
म्हारै खाधै दवाय दीना मिनख बचावण रो दायित्व
जदेई हर दिन हू कूकडै रै कण्ठा जागती,
शहर री अधार गळी री सूगळी भीत नै भागती,
विष भरियै डक स्यृ काटीजती रेवू हर दिन ई' ज ।
उण बगत घणाई बोलै
आ ता कोई कविता ई' ज नी है
फगत आतमघाती होवणा ।
जाणू नी वै सगळा क्यू नी समझ सकै
नारपणै माय जिणविध अमरता रा लोभ नी रैवै
बीयाइ हू हरियाळी रै हाथा रो सैण देखी ही जदेई ।
बीयाई ह्विड गिगाळै सूरज रै टूट-पडणरा मरद सुणी ही
जदई पळपळती अगण माय सवदा रा घी उण्डेळ्या
लाइ करू हूँ आखा कपटी छळनावो ।

उथळै री उडीक

इण उमर माय समझ सकू कुण कुण कितरी चोखी राय देवै ।
घणा बड्डा लोग ई' ज, जका समझै उठ नी सकै ।
घणाइ' ओट माय पड़दो राख्या, वायरियैरो वळीतो जुटाय भेळो करै ।
हाथा माय अधिकार दवणो चावता
आपरी पाती माय साभ राखै सुख रै वदळै राख ।
सामी, पींठ ने थपथपावता/लारै चक्कू री धार तीखी करे ।
सत् री प्रतीकी प्रतिभावा/अपवाद स्यू दाव राखता
अनुशीलन रै कूडै-खोटै क्लमच्या लिखारा नै
आगे आगै वढण रो मारग देखावै ।
इण उमर माय समझ सकू कुण कुण रावण सजणो चावै ।
एक हाथ स्यू वरदान देवै कुण दूजै हाथ स्यू मौत रै अस्त्र री धार तीखी करै ।
इण उमर माय समझ सकू । साच अर ईमान री सिरधा रा अरघ
अरपण करता भुगत हाथा वह्या अस्त्र दान करै ।
छळनावे री जग्या बणावता / कुण अणूतै मौत रै दूत नै बुलावे ।
हू आज अतीत री अधिकारिणी होया
पिरथी रै कन्नै औई ज सवाल करणो चावू ।
गीतडला माय, कवितावा माय नाटक-सिनेमा माय
औई ज तो है इतरो प्रतिभा रो दुर-उपयोग ।
ऊजळी प्रतिभा नै ढक्ण सारू
काली कळायणा री इतरी मारकूट ।
नी निपजण जोगै हिवडै जका फसळ फळावणा चावे -
रोगीली फसळ स्यू
मन रै धान रो काठो खाली रै जाय
इतियास बी रो जवाब चावै
बालौ काई दूयोला उथळो बी रो ?
हू फगत ईण ई' उथळ नै सुणणो चावू हू ।

नक्षत्रा रै गीरवै

म्हारी अरदास नी है
माथे लटक रई है तण्योडी तलवार
घणाई बीया ई वालै ।
हू बोलू
थमणो नी है —
घण परकास-बरसा पाळी सिधावूली
अकास गड्डा हाया ।
जलम रै भ्रूण माहि
मात रै बीज रो अपमान करती
स्पीडामीटर री सूई ताडती
छूया जावूली पिरथी री निर-अक्ष रेखा ।
ओळू भरीज्याडै गुलाबी बेसिन माय
ठराय जमायद्यूली
महासून्याड रो इन्तरज ।
वतार री तरङ्गया नै काट परी राखूळी
सून्याडै रा एक मिनट रो समै ।
सत् मारग रा गुप्तचर होया
म्हारै इन्तरज-वाग जावता जावता
मिळैलो
सई गुप्तघन रा सन्धान ।
जौहरी री खातीली दीठ ज्यू
अकासा रैवूली जागती
नक्षत्रा रै गीरवै ।

आज पैली जनवरी

मेजा सूती रैवूली और कितरा दिन
आधी-भगूळ रै समाचार स्यू थक्योडो मन ।
नींद रो डूगर जमग्यो है ।
निठुरता रा सबद सुणता सुणता
बोळा होग्या कान ।
चारूमेर अधारी भीता ।
आज बरस रै पैलडै दिन ई' ईयाळको लिखणो पडै है ।
झरोखै रै बारै ताकताई दीसै
कडकडावतै पाळै,
चकारियै री अगण नैडै
उगाडो निरत रो उच्छब ।
किवाड रै बारै पग राखताई समझगी
हर दिन मिनख री उमर चोराय
नूवो कानून विधान लिखीजै ।
इण ई'ज थकाण रा भारा लिया
कितरी दूर पाळो-पाळो जाय सकै ?
काच रै आरसियै निजरी छिब टाग्या
और कितरा दिन कल्पना री उडाण मारीज सकै ?
आज्यू बी ई ज अतीत रै डूगर रो हेलो सुणण री
इच्छा जागै ।
किणबिध भगोडै बायग्यै नै हिवडै भरिया
निरमळ सवारै नै
सरधा-सन्माण दवता हा गुणीजणा ।
काई नी हुवती घटताई, लगोलग बिरखा रै बिलखण स्यू
अणदीसतै तार रो जन्तर खाल नाखता
मारगडै रा मिनख ।

विप-भवरो

आखी रात निजरैई हिवडै रै माज़ मारि
सवद सुर सुणू हू ।
ताई पण घणी साध ही वाळपणै
इण घडी आधी क दीगै ।
अ गाण रक विरखा रा िरळावणो म गाया
सीट्या वजावता सिगायग्या पठीडा रा टाव्टा ।
उण 'ई वळा स्यू नष्ट मूरत हुयगी
रग कोरणी रै कैनवास ।

भीज्याडी माटी री साधी साधी सौरम स्यू भीजगी ।
गाधळी रै रगत गुलाा पराग मघडलै
अजताई डक मारै विप भवरा ।
एकायत सुपन साध री ातना नै टुकडा-टुकडा खिण्डाय
घणो डरावणो एकला जुद्ध सरू हुवै
मन रै आगणै ।
इण तर्‌या एक रै परै एक सीयाळी सिझ्या
इण तर्‌या अळगा-अळगो भारो
हर दिन घिर आवै रात रै सून्याडै ।
जितरी दूर पगा पगा सिधावू फगत ई'ज एकली
नदी किनारो हरियाळो खत रगीज्योडा किवाड ।

नैणा माहि हरियाळो रग

म्हाम काई दळ नी है ।
रात रा आगार नी है दिगा अन्त जमै पाळा
नदी रै छानै मारै जैड़ा मन रो अगाग ।

म्हामे कोई दळ नी है ।
मन रो भारा नी है
वाय माहि कूड़-कपट रो रिस
कल्पना री आट जावै जीवण म्हारो ।

म्हाम कोई दळ नी है ।
अगाणरक ई रकणा नी है
छिया मूरत मिनख निरखै
सृष्टि री पृजारण हुया काट्ट हू वेळा,

म्हामे कोई दळ नी है ।
प्रीत माहि नाटक नी है
घणा रो सूनो हिवडो
जळ माहि काया कोर्‌या मदमस्त रम्मत ।

म्हामे काई दळ नी है ।
किण इ चितराम माय अधार नी है
नैणा माहि हरियाळो रग
घणै हेत कोड स्यू बाग सजावू ।

मारगडो गुमावता

नैणा रो उजास जगता

आवा अनुभव करा सृष्टि रो हर एक परम ।
ऊनाळै रै सन्ध्या तारै नै हला मारती वालू
अणगमय-आधा रै पामै वन्या मत ना
कलाकार री साधना ।
सीमित सुपना नै मावळ सम्भाळता
निजनै तावड़ो बणाय वळावो
एक छिन री ओळखाण ताणै
सगळा रै हाठा पग्स रैवणद्यो ।
म्हानै मिनख बोलौला तो मिनख ।
राखस बोलैला ता राखस ।
वै फगत निजरै नैणा रो उजास
जगावैला जदैई ।
दूजा लोग मारग देखावता
चाल ई नी सकै ।
ऊधी वैवती नदी देखताई
ओळख्योडै डागळै रै खुणै सिधावू
घणै ई नैडै स्यू अकास नै
ओळखण री खेचल करू ।
उण ठौड सुर रो सम्मोहन सुणताई
सृष्टि रै तावडै माहि
निज नै भिजोया
पिरथी रै माथै ऊपर
कोरू हू निजरी छिब ।

हिवडै रै आरसियै

म्हारो तजरबो म्हा मागै ढैवणद्यो
थानै दसूनी नुवा पुरस्कार ।
मितर थोन्या पानै बुलावूली —
धरोखर छिया घणी दूर मण्डताई
कूड़ी आस री किरण्या री धारी मांहि —
नीव्वारी —
उजाळै री नाम हुवै,
अर समय रै पिड़ै फूल तुगता
मारै मारगड़ै नै
आयस स्यूं
गेरी माय देवती धून रै ताल तान स्यूं
पुलकी ठसाळै रै सस्नै
निरखण देवै ।

स्वीकारू हू

जळ रै नीरै हाथ मेलतो हम्यो हो या
घणै वरसा पछै स्वीकार कर्‌यो हा ।
आखी पिरथी माहि इतरा घर
इतरी रहस्य री चढाई उतराई
सुपना री गैराई
फटकारा री पीठ छूया
कळाई डूबाती चानणी ।
तौई अधारो छावै उम्मीद री पीठ ऊपर
(हर पळ) घणाई ओझळ नकशा लिया
(बिरखा रै हरख कोड स्यू) ऊभो रैवै
धाप रै न्हावण घाट ।
तौई ऊजळो रग लिया
खोज रो इतियास घणोई पुराणो ।
कछुवै री पीठ ऊपर घणी उफस्योड़ी धार्‌या
जैडो मारग
घणी वेळा सुणीजै
दर-मोलाई रै राखसपणै रा समाचार ।

जात-पात रो जुद्ध

म्हानै ई चाईजै लालटैण हाथा माय
निजनै ई जावण सारू ।
मारग रै दानू सारै
गूगा सज्याड़ा काळा काळा घर
सुपना वरफ वरणी ठण्डी वाय —
क्रान्ति रो घाटा मासै
लाई तिस्मी वदळौ ठाण्याड़ी अगण ।
समित्या सायती त्रिसरावै
लाभ री कीमता भारी करै दह ।
इण वगत थाडी क छियावा आरसियै भरै जळ ।
चादो काळख लिया रूप गुमावता दात काढै
भाई भाई रो झगडा मण्डता दखता ।
पिघळ्याडी समानता छितरावता थका
अधारा मिटाय नी सकै आतङ्क दह स्यू ।
शीतागार लाशा दख्या जात पात रा झुण्ड
(मना करता रात नैई धूजावै कानी उजाळै री वाती)
ताई पण सभ्यता री भीता धूजाया
धू धू करती लाय लगाय
गिरगिट जैडा रग बदळता स्याळिया ।

निरदैयी मकड़ूया रो जाळ

वेळा जिण ठौड़ लगोलग टूट पड़ती रैवै
मिनख रा फूटरा सिरकाय लवै हाथ ।
म्हारै अर थारै विगाळै नी है ।
जीवण रै काव्य माहि पड़दो पड़ताई
घणी दूर द्वीप माय दम निकाळो जैड़ा लागै ।
वायरियै रो अदेसो भेळो कर कर
निजनै ठावम देवणो पडै ।
तोई ई' विना डरता ई' नी ।
घणी दूर रै प्रीतपणै रो हेलो सुणता
नी जाण्या हाथ वधावता आवै, लागै
इणविध ई हुवै ।
जिण वगत इतरी मकड़ूया री हिसक दोठ
उण वगत घणो ई' सावचेत होवणो ठीक हो ।
जका देखण वाळा नै तमासो देखावता
अचाणचक आणन्द दिया देखाता रैवै ।
की नी हुवै, पण वानै 'जोकर' बोलता
मानणो ई पडैलो ।
मायली जितरी कूड़ है —
छील छील 'र ईमज वणाणी पडैली ।
औ ईया नी हुवता, हियै-रोग झल जाय ।
ढीलो-ढालो होय 'र हीण्डणो पडैलो
काळै पडदा सागै ।

सदै ईया ई' हुवै ।

सगळा रै हिवडै माहि हरियाळी पखी नी रैवै ।
घणाई 'सजनै फूला' रा सुपना मोलै
पौसावण रै बारै ऊची कीमत चुकाया
सगळै धान माय खील फूटनी जाणताई
ब्याव रै बाजोटै बैठ्या मन मन सोचै
इण दिन खातर ई
इतरै दिना री उडीक ?
उण पछै धणी-सुहाग तणै
एकादसी रो दिन काटता इ
पाडोसण्या रै पासे
गरब गे विषय
किण रो कपाळ बळतो अधराता
घरा घिरै महेश्वर रो उगाडो निरत ।
लुगाया रै कण्ठा रो सगीत हुया
अधराता थियेटर जमै ।
पल्ले स्यू आख्या पूछती छोरी सोचै
चार-नैणा एक हुवताई,
एक जीवण माय
घणो ई की घटै ।
ऐडी ई वाता सुणता
घूजणी छूटै नी विचित्र पिरथी री ?

वरफ री गुडिया

घणाई' निरख्या है समझौते रै मार्वल पाथर ऊपरा
प्रीतड़ली रा फूठरा नकशा ।
मध्य युग रै राजीनावै सई माण्ड्या —
गुमानी छोर्‌या
वरफ री गुडिया सजाया
रहस्य रा हाव भाव समझै ।
लारै स्यू किणरो हाथ वधतो आवै
मुजरिम दस्ताना पैर्‌या ?
अठै स्यू सरू,
उच्छब रै मीरियल स्यू चौकस हुया
एक 'रन लिया
जीवै सुरक्षित आसरै माय ।
ऐड़ो नी हुय सकै तो
नैणा रो उजास जगावो ।
नैणा रै उजाळै एक एक करता वळीतो जुगाड़ता
धीरै-सुस्तै अगण री लपटा कढावो ।
अगण माय दस्ताना बळाया
सुणनो ई' कोनी चावो
नूवी भर्‌योड़ी कैसेट रा
बोदा बिलखता सुर ।
घणी दूर चालता
वळणै रै कारज रो अधारो पार करिया
गुडिया सजाय सको हो
तद वरफ री नी ।
लोह-इस्पात री गुडिया ।

मारगडो अर हू ।

सिझ्या रै मुखडै चौरस्तो पार करी ही घणी'क बार
पण मारग पार कर नी सकी ही किण ई' दिन
फगत पूगण-ठौड ओळख सकू हू अस्थायी भाव स्यू ।
समदर री दहाड सुणती
अर नदी रै छोटै सारै ऊभती
जलम दियो है टावरा नै ।
निजरी भाषा विरथाई भटकण नै
ईश्वर है, सोच्या ।
चानणी रात आवताई
गेला विचाळै दीसै और घणी ई गेला ।
छोटो मारग ई लाम्बो हुवै घणोई'
तद दूर स्यू ई नैडौ लागै ।
तिस्सो मिरगो अर अगण रा सबद ।
सवारै नीद टूटताई
नैणा नीळो उजाळो
तद चौखै स्वाद री चाय रै प्यालै माहि
आणन्द स्यू निरत करै
तिस्सो मिरगो ।

सूनो लाड

ईयाळकी घणी बेळा
ओळू आवती पूठी सिधावै
उच्छब रै नसै माय ।
उगाडा प्रहर
बेहोस हुया जूझै है
डक मारतौ बुखार ।

अगण झुळस्योडी ऊण्डी जडा
सस्ती मोलै
दिरखत सागै कुसुम-ससार ।
फळ मेळती रीढ
गरब स्यू बैटै है
जीवण झरोखै रा किवाड ।
हियो-पिण्ड बाढ माहि बैवाया
तोड नाखू हू
अणबटियोडी भीत ।

सूनी उडीक

उदासी री जळण नी रैवेली
फगत एक समदर-मोती री आस लिया
लाजा मरतो अकास निजनै वणाल्यो ।
अळगा मत करज्यो अग रा गैणा गाठा ।
ऊनाळै री छिया छिया मांहि
हमदरदी वायरिया काया मळतो
शकुन्तला रो सगळो सुख ।
छानै छानै गूगळै परस स्यू
विन थकाण डग भरणो
लता-वेलड़ी री मूर्त प्रेरणा ।
छोड्योडै लाम्बै सासा री तऱ्या
लारै चालण री गेला पार कऱ्या
महाअकास ज्यू अभयवाणी सुणाय ।
विना पलक झपक्ता सूनी उडीक रा
सदै खिल्योडा गुलाब रा कोनी,
रोही री भीज्योडी माटी री सोरम ई'ज
शकुन्तला रो शाश्वत सुख ।

थे सागै हा

सिधावणो चावू चिर-बसन्त रै द्वारै
पण उण पळ थे म्हारे सागै हा ।
अकास निरखण री मुदरा बणावता
बोल्या हा मारग देखावोला म्हानै ।
छिन-छिन बाय वदळण री सोरम सूघता
बोल्या हा वैगा पूगाला ।
चञ्चळ भळकै स्यू ईडन-गार्डन री दूब दूचता
मुळकता-हसता मनस्या रो रग घोळता
पगा पगा चाल्या हा घणी गेला ।
उण पळ थे म्हारा सगी-साथी हा ।
निजरै हाथा चानणी फाड्या
न्हाया हा मुगत बायरियै ।
हसी-ठट्ठा री रुत पार कर्‌या
बिन-कारणै रया घणा दिन ।
बिरखा रै पासै सूप्या
ओळू रा चीथडा
बकुल - बायरियै ।

अकाळ-विदाई

बावळी छोरी पाता री सजीवता
देखै कोनी ।
फूला रै हाथा रा सैण, अनादर स्यू उदास ।
माटी रो धीरजपणो, हियै पिण्डा चीकणो ।
आधै अकासा, मर्योड़ै पाथर रा सज्योड़ा नैण ।
चितराम माहि उदास प्रीतलड़ी रा कारीगर ।
भोर रो नटखट बार्यरियो —
छेडै वार्यलिन रो करुण - अलाप ।
बावळी छोरी डूगर रो धौळास देखी कोनी ।
कवळी माटी माहि पग राखती ई'
सगळो फूटरापो उतार नाखी अकूड़ी माय ।
बीरी पुराणी वशावली, दिन ढळतो बटाऊ
काटा री बाड स्यू झिडकीज्योड़ी
सृष्टा री रग-कोरणी
सिरजणी विमुख बसन्त ।
बावळी छोरी पछींडा रा गीत सुणै कोनी
कुवेळा री आधी-भगूळ आय धमकी समझ्या-
गरबीली होय सून्याडो ई छाट लीनो ।
बीरी विधाता भीज्योडी काया नै
स्राप देवै पिरथी री गोळाई
तौई पण निस्सरमो बसन्त
आवतो ई' सिधावै —
सिधाय आवताई ।

दुख रा बौपारी जका

म्हारी चेतना रै माहि
फगत एक ई' तारो टूट र पड़्यो ।
सगळा री, हताशा रै विचाळै म्हारो मनडो ई'
एक एक करतो रळमिळग्यो ।
जदैई हू इण घडी निजनै ओळख नी सकू ।
फुटपाथ ऊपर लैण सर ढिगळो सजाया
दुख बेच बेच र सुख मोल्या हा जका —
जका रै माय अर बारै आधी तूफान
सम्मोहन रै खीचाण
म्हारै मन नै खीच लियो हो ।
उण ई' ठौड स्यू
म्हारै हिवड़ै माय स्यू बैगी बैगी निसर आवै ऊनी बाय ।
हू बिना लै'र्‌या री नदी रै सागै
छन्द बिना पाळी चालू ।
घणी दूर रेतीली गेला पार कर्‌या
जे किण ई' दिन काठी करडी माटी मिळ जाय —
ऐडी' ज आस लिया रैवू ।
बी जैडी निपजण जोगी ज़मीन मिळताई
फूला रो ढिगळो द्‌यूली फगत बा खातर
जका दुख री चीज्या लेय'र
पूरण पवित्रता स्यू मोल बेचाण करै ।

•

सुपन-उजास रो टूटणो

मननै सैहजपणै स्यू छूणो नी जाय
चारूमेर कजरारा मेघड़ला ।
घणी बाता रो मोल-बेचण बजार,
मुठ्ठी खोलताई पड़ै खिण्डताय
निरासा रै वायरियै ।
पाख री छिया हटताई
सुपन-टूटतो उजास ।
सत् बदळीजै कम्प्यूटर रै हाथा ।
तू ऊगाही कर ले'य सकै
जितरी हरख-कोड-प्रीत, जिण किण ई मिस ।
रुत सारू कथा बाचता
व्याकरण नै ई' तोड़ भाग सकै है
तौई मन सैहजपणै स्यू छूइजै कोनी ।
हिवडै लोई ढोळ्या सजीव करता एक और हिवड़ो–
तौई छूई ज सकीजै मनडो ।
बी ई मन छूयाडै मारगड़ै चालता आवै
सुख समन्द री नदी माय बाण,
ससारी रेसमी कपडै री भाषा, उपभाषा
सगळी ठीक ठाक राख्या
भिजोय देवै हिवडो पिघळाय देवै मन ।
सीतळ चानणी माय अर सौगन रै झरणै माहि
वैय जावै अविस्वास रो ठिकाणो ।
अजकाल ओज्यू कम्प्यूटर रै हाथा
इणविध नीं हुवै ।
मन नै छूवणो नी चावै
देह नै लिया थोडी'क रम्मत रम्मै
टूट'र खिण्ड जाय मन ।

इतियास बतावू हू

इतियास लिया हर एक दिन की न की लिखू हू ।
मुगल मिनखा री वर्णमाला देखताई
बारा जलम भर रा गाभा खोल मेलू हू
बारी जितरी शिल्प कळावा,
भौतिक आत्मा रै इतर माहि घोळाया
विनास रै समदर माय वैवाय नाख्यो है ।
इण वार तो खरोखर घणाई' कमर म मुक्का मारैला
निजरी देह नाच-नाच 'र निजनै ई' लोई-लुहाण करू हू ।
इण पछै जे जलम-दोष स्खलण नही हुवै
फासी चढाय द्यो म्हानै
आ अरदास लिया ई' ज ऊभी हू
स्वीकार करू हू —
म्ह सगळ्या घणी लाज बेच पर्‌या, रोणो मोल्यो है ।
म्हा सगळ्यारी आखी सुख सायती, रगीन फाईल माहि कैद कर्‌या
परी कथावा रै राज्य माय राखी है ।
उण ठौड ई जका नै पौरै माय राख्या है
घिरणा ई विसराय दीनी —
तौई इणघड़ी थोडी'क लाज बचाया साभ सकी हू ।
जदैई जलमदाता रै राख्योड़ै नाव री लाज स्यू
आपारा ई'ज निज रै मूण्डै
काळख पोतै है ।

जदैई तो नैडै आवणो

अणन्त काळ घिरती इण ठौड आई हू
नदी रो मौन-वरत तोड़ती साफ पाणी माय
माटी-मळ्योड़ो मुखड़ो धोवण नै ।

उण ठौड़ अणगिण स्याळिया री आख्या माय
नकली तारा खिलता रैवै
कितरी रहस्य री लकीर्‌या
टुकड़ा टुकड़ा खिण्डती
खिलता फूल झड़ जाय ।
हिवड़े री किरण्या माय,
नदी रा जळ सोसाया
जीवन भरणा नावू ।

गणो नी
निग पत्ता छिनावण खातर
हिवड़े री वई रै माय ।

थास्यू प्रीत करण नै

बिन थमतै दुख माहि, था सागै रैवण नै, हू पाछी आवूली ।
दूर-नैड़ै, रोही-हिवड़ै, प्रीत री बाढ बैवाया, जाग बैठी रैवूली ।
बिरखा द्यूली, आसू द्यूली
छूया हियै री धूजण द्यूली,
सेजा सुख री सोरम मळमळ
खुसी स्यू जीवण भर द्यूली ।
सुख-झिडक्योडी होया सुख-समदर तिर थारै पासै आवूली ।
ऐ बाता सुपनै री चाली, कद साची किण ठौड बोलूली ?
ठण्डा हाथ, ठण्डी पासळ्या
ठण्डा नैण-मोतीड़ा दोय
नैडै आवूली, भरोसो नी है,
परस द्यूली, हिम्मत किण ठाय ?
लता-बेलडी लाजा मरै है, थासू प्रीत करण नै ।
अधराता नीद टूट जाय
ताती तपण अग बळाय
नैणा बळै बी धूवै माय
धूजै अग पीड सैवताय, राणी थारी बणणनै ।
मनस्या री बा मन री गाडी
ध्रुवतारै रै पासै धाय
आस-मोतीडा दूब स्यू फूट्या
सौ बाधा री बाड लाघती, था सागै मिळण नै ।

बै आवैला

बी दिन सवारै नींद टूटताई' बारै ताक्ताई
एक रजनीगन्धा रो गुच्छो जको म्हारै हाथा झलाया हा बोल्यो
बै आवैला ।
ऊण्डो रोही धूजाय, जकी बाय बैवती आई म्हारै केसा नै छूया
बौ ई'ज बायरियो म्हानै सगीत-सुरा माय काना म बोल्यो -
बै आवैला ।
एक टोळो पछीडा रो, अळगै-अळगै भाव स्यू समझावण लाग्यो
खळखळ करता सबद बोल्या, तौई एकई'ज बात समझ म आई
बै आवैला ।
भोर हुयो दोपारो बीत्यो अर सिझ्या आई
आखै दिन एक ई ज बात बार-बार मनडै ओळ्‌ ल्याई
बै तो आवैला ।
ढळतै सूरज नै निरखताई, सूरज मुळकतो हौळै बोल्यो
बै तो आयोडा है फगत तू थारै नैणा नै खुला राखजे ।

हिवडो उण रो खुल्योडै अकास रा किवाड
दूधिया चानणी रो मुगट पैर्‌योडा
बै बैठा है आखै दिन, आखी रातडली ।
बा नै ई सूपी म्हारै सिझ्या मालती हिवडै रो बकुल फूल
अर चिर-दिना रो गुलाबरो बाग ।
बा रै नैणा माहि अरून्धी उजास ।
सगळा खातर हरियाळी री अरदास करता बैवै गेला-घाटा
बै तो छळनावै बिना खळ बिना कितरा करूणामय ।
जदैई बा नै द्‌यूली म्हारै मनडै रो मोर
सुपना रै झरोखै ओळू रो अलौकिक सैनाण ।
अर बा नै द्‌यूली तपोवन रै चिर युवा श्रेष्ठ मुनि रो सन्‌माण ।

ईश्वर री करूणा

कई दिना पाछै घाट ऊपर डूगी लागी हिवडै रै छोटे किनारै
उफाण पार कर्‌या म्हारो हिवडो आयो
और एक हिवडै रै खींचाण ।
रूणझुण जळ रा सबद जीवण री अन्त वेळा माय
हू म्हारै सून्याड़ै बिचाळै
एक नूवो सिरजण जोय लीनो ।
नाव नी जाणू रोही-फूल, तावड़ै री सोनाळी डूगी चढिया
मनडै री पात्या नूवै तजरवै री
अन्तर-जोत म्हानै पूरण सजाय ।
सगी-साथी सै एक जैडा है, बोई आरसियो अकास, प्रकृति
भोर रो सूरज, गोधळी लगन,
तौइ पण नूवो लागै, सगळो इ' मायामय ।
कर्षण-धातु ज्यू, एक दिसा स्यू दूजी दिसा नै
आपस माय आपैई खीचै
चुम्वक-खीचाण जैडी गैरी मनस्या ।
रई वैठी धाप रै आसणियै तिग्या मिरिया छितरयोडी
आज बैयगी वरसा री सूवती पीड
मुरधरा रै तपतै बायरियै ।
श्रीहीन ज्यू फूटरापो गुमाया, छन्द बीहूणी, सबद बीहूणी
म्हारै जीवण री इण कुबेळा माहि
किणठौड स्यू आया एक परदेसी मेघडलो जळ-भर्‌योडो ।
मान पण नी हो म्हाम, फगत अरदास ही ईश्वर रै कन्नै
सुर-सगीत अर मेघ-मल्लार
सुण सकूली म्हारी काळी अमावस री राता माहि ।
लीलामय वाणी सुणी हू आज, इमरत घोळ्योडी बतळ
वचित कर्‌यो नी ईश्वर म्हानै
इमरत दे ग्यो म्हानै करूणामय ।

आवणद्यो भोर, फाट्योडै धवर माय

थे जाणो कोनी,
पिरथी री ठण्डक ताणै धूजै
त्रिरथा रै जलम रा गीत ।
चश्मै रो भाप-जम्योड़ो धूधळो काच पूछ्या देखताई
नैणा नै नी दीसैला ।
रै' रै पर्‌या कुवारोळी मनावै फीकै रग री मीनार ।
हज़ारू धूप री सोरम ई' ढकै कोनी, वदवू भर्‌यो वायरियो ।
सरणाई रै सुरा, चिरकाळ ई'ज रोवण रो घर ।
दृढ़ता री मुट्ठी खोल्या गुम जाय
आखो स्वदेश आखी प्रीत
सम्प्रीति रो आलिगन ।
आपा सगळा सूना होय जावा ।
मेघ छूवतो अकास घेर्‌या,
आपा ऊभता रैवा थकाण रै न्हावण-घाट ।
तौई ठा है
मर्‌योड़ा पौधा री देहनै घस घस
कोई मल्हार नी गावैलो हरियाळी रै ताणै ।
कोई सायती छेद्या भागैलो कोनी
जोखम झेलती पिरथी री नीदडली ।
इतरो सगळो जाणता थका ई'
तौई लागै
कोई तो बोलैलो, एक दिन खरोखर
आवै है भोर, फाट्योडै धवर माय ।

किण रै खातर धमाका

आज रै घणै रूप्योड़ै दिन माय
तीसरी दुनिया रै शिल्प्या री नींदड़ली माय मीच्योड़ी आख्या ।
झौड़-झपट करता, माटी नै बुहारता
कितरी चालबाज्या करै है, जाणो ?
बिरखा री चोटा बाजण लागै है —
पतळी लाम्बी टिवड़ै री पासळ्या माय,
झाग रा बुलबुला, इन्नरधणस, अणढक्योड़ी धूजणी,
किण री सुख ?
धरमपणै रै खातर धमाका
सगळा रै नैणा माय सून, वचणै री खोज,
मुखड़ै सायत पीड़,
रोवण री छिया री जळ-झरणो
बिन धूजतै तावड़ियै सनेह री मूरत नै जळमाय पधरावणो,
जदेई कुवेळा रै धवर नै,
बिन उपाय लुळलुळ सलाम ठोकै जाय ।
फगत और एक'र छिमा कर्‌या जाय सकै
जद उगाडी कला री मूरत रै मुखड़ै हसी खिलाई जाय ।
इण ई'ज आस माय,
औ इतरो दोरो ई'ज कोनी,
मोटै सीजयोड़ै चावळा री सोरम
वै सगळा हिलाया वैठै ।
टूट्योड़ी, माटी री रकाबी रो जम्योड़ो झरणो
ऊधै मूण्डै होय
वड़ जाय मूण्डै रै खाडै
इण रै पछै ई'ज झरतो रैवै
झरणै री हसी होया ।

कारगिल समस्या

तू ई'ज तो ल्यायो है
अणसैधे सरदा री मूरखता ।
थारै खातर मुल्जिम रो कठगड़ा ।
क्यू करी कारगिल समस्या ।
अणूती रीस–
म्हारै फूल चोरावण री इण उमर माय ई' ?
थे काई ओळख्या हा सिपाया रा मर्योड़ा मुखड़ा
लोई रो ऋण, औरसता री वदना ।
धरती माता रो आचळ क्यू भीज्योड़ो ?
अरे मूरखा रा झुण्ड,
था सगळा नै इतरो साप दे'ग्या हा रवीन्द्रनाथ
था सगळा रै लाज-सरम बोला किण नैनी चीज़ री ?
वै तो वाल्या हा दू नी आवूलो,
आ बात था सगळा रै हिवडै चिणसी ई वाजी नी ?
रवीन्द्रनाथ रै ओज्यू एक'र आवता
जूही चमेली फूला माय
बायरियै रै जळ-मोतीडा माय
कितराई सुर
कितरी ई सोवणी सोरम बै'य जावती
नूवी लै'र्या रै हिल्लोळै ।

सौगन री छिया

थे सगळा बिन कारणै बाती जगावो
बाती बुझाय द्यो—
टू धतूरै रै बाग जाया दखी
उण ठौड़ ई आन्दोलन उथळपुथळ हिवड़ै काटा बींधीजतो
दिन स्यू रात रहू चादड़ला ।
मूसळधार बिरखा, गायब हुवतै उजाळै माय स्यू
परछाई हला मारै — 'डाग ताड़'र आव रे ।''
बारूद री बदबू गेला घाट प्रहर सुणै ।
बरफीली सीतळ नींद माय आसूड़ा रो ढळकणो देख्या
सौगन री छिया आडी होय'र थरथर धूजै ।
ओळू आवै माटी री बाता, जामण रो चूमणो,
गाव रो मगता हसतो बाता सुणावै
सगळाई बध्योडा है ओळूडी रै राज्य माय ।
कबूतर-नींद माय दोहा रचण बिचाळै
अस्थिर पगा रो पाळो-पाळो चालणो
फुसफुसावती बोली, डरावणै कण्ठा
रात रा पछी हेलो मारै ।
इण बगत आधो मगतो धरम री बाता नी कैवै
धरम नै खोटो मारग देखावतो, लोई री बाता कैवै ।
थे सगळा बिन कारणै बाती जगावो,
बाती बुझाय द्यो—
नीळी छिया नै राख बणाया
सिरै नाव लिखज्यो
दूध रो समदर ।
नी जाणता लिखी ज जाय
रोही री नींदडली ।

वारम्वार हुवै

आपा गाभा बदळाणा सीख लिया है ।
सीख्या नी फेफडै माहि हाथ घाल र बदळण सारू
महाकाळ री गत ।
ईया हुया जीवतैपणै रै जगळ स्यू बुलावो आवतो
लिग भाग्या, हाथा माय हाथ राख्या
पाळा पाळा चालण रो ।
तौई जद उडीक रैवै अजताई समै रो हाथ झाल्या,
तौई जद उजाळै रै वजारा
नीळी नस्या रो मोल-बेचाण हुवै
आयोजन माण्डै अजताई —
हर एक जलम री सीवा बणावता-बाधता
तिरणो बिसर जाय ।
वीई'ज दिन स्यू खोट ताणै
सबद खिण्डाय खिण्डाय
सिरकाय द्यू, सवारै रो सूरज ।
मूरख मिनख चौखट पार करताई
नैचै स्यू अगण लेय'र रम्मै,
चोर-रेत निजर नी आवै ।
अधारै माय डूबताई, हरखता हाथ ताळ्या बजावै देखणवाला ।
पक्का खेलार होया सगळा खातर तिस जगाय राखै
तिसळातै हाथा रै ऊपर वासुकी रो फण झाल्या
प्रतिभा रो उजाळो देखाय ।
पुराण रै जुग माहि जकी छिब देखती-निरखती सूयगी ही,
घणैई बरसा पछै जाग उठती देखू
दूजा रै हाथा रम्मै है
बा एक ई'ज सागी छिब ।

झरणै रै मुखडै थकाण

था नै बोली ही
अणजाणी हे वै रोही री बाता ।
जिणठोड़ गिगनारा उडती चीलख
लकीर अर आखर री भाषा स्यू भेळी कर
उठाय ल्यावै
अणमैवती भूख ।
उण ठौड नारूमेर सबद बाजै --
चौक्स रीत स्यू बोदा घास जडामूळ उपडीजता
गैरा गिरव्यावै -- ईश्वर । ईश्वर ।
उणठौड है बध्योडे दाता सभ्यता री हाथ-ताळ्या ।
उणठोड रुत बदळण री तर्‌या
बदळ जाय तजरबै रा तळाव ।
उणठौड है परटा खावती नदी री टेढी मेढी
गुम्याडी विज्ञापन पास्टर प्रणाली ।
उण ठौड सूवतै टावरा पासै रात कटै
बिन पडदा रै झरोखै माय ।
उण ठौड मूगै दाम री मोल्योडी
टूट्योडी माळा रै
भ्रष्ट मणका नै चुग-चुग
गूगी रै जाय
लिलाड री लकीरा बाच्या ।
वी रोही रै झरणै रै मुखड़ै थकाण ल्याया
रोही रो थाण खाल'र
राखै गाढी नीळी कागदा री बई ।

जाणणो चावू

हूं मारग कनै जाणणो चावू — मिनखा रो इतियास ।
मारग खाल नाख्यो सूरज रा किंवाड़, चादड़लै री कळारी माटी ।
लाल स्यूं गुलाबी हरी स्यूं वाळै पड़दै देखाय
अणसावद्योड़ी छिया ।
पणै कुचमादी वेग स्यूं दौड़तै घोड़ा रै खुरा रा सबद ।

हूं रोही कनै जाणणो चावू — प्रीतड़ली रो इतियास ।
रोही-अकरसा खिलग्या है
छन्द भर्‌या माण्डणा, रोही रो रग,
केमा रो घनत्व सृष्टि रा गीतड़ला ।
अर सवारै मिझ्या वैवताई,
सैवणपणै री आवेग भर्‌याड़ी छिब ।

हूं नदी रै कनै जाणणो चावू — दुख रो इतियास
नदी रै गरभ माहि देख्या है
पाथर-माटी रा गाभा रेत री ओढणी,
विनास-घड़ण री गरड़ावती दहाड़,
प्रतिवाद अर टेढी हसी माय
छळनावै री भाषा ।

ईसकै री वळत रा फूल

चुप रैवती तितल्या और ई' 'कोया-कोपकार' बणावैला नी
बावळी माटी रै हिवड़ै ।
मनस्या-मुगत मुरधरियै अलादीन रो दिवलो लिया
घणाई' आपरा निजू बाग बणावै ।
हिवडै झरणै री अगण लिया
मृण्दै आलपिन पावता
मारगडै पाळो चालै एक टोळो मिनखा रो ।
वारी छिया, छिया - मिनख स्यू हर छिन लडत माण्डै ।
विवेक वी रै ऊधै सबदा रै सागै
सबद काई है, बो तो घणाई नै नी ठा
फगत तोड-घडण री एक तीखी अवाज सुणीजणो समझै ।
जदैई डरयोडा नैण खोल्या,
सौगन रा हाथ हिलाया
लाल मुखडै रो घोडो होया,
दौडै अन्न नै जोवण सारू ।
दोपारै देखै साय साय मारगडै
बो एकलो ई'ज बटाऊ ।
किण ठौड ई'ज सभावना रो एकइ ज हाथ नी ।
ममता रो वज्रार
उण बगत धूडो माटी सार – खाद ।
जदैई घणा रै बागा माहि
खिलै ईसकै री वळत रा फूल ।
उण ठौड अगाध उच्छव
नैणा रै निस्तेज जळ माहि
लोई रो खारो स्वाद
सभ्यता रै ऊधै मूण्डै री नदी माय ।

लिखणवाळा

लिखणवाळा, तू जाग
करड़े पाथर रै हिवड़े लिख माण्ड
और एक दूजो लाम्बो इतियास ।
अतीत री गुफा टटोळ्या
नी मिळै ऐडी घटनावा ।
कुवेळा नींद माय डूबी ही जितरी सत् री काया,
ठगा रै बजार, नीलाम हुवती बोली लगाईजै
धरम रै सिहासणा
अकासा फिरणवाळा गिरजडा रो झुण्ड
सूरज नै माटी उपर उतारैला, समझ्या
पाळ्या है घणा ई' वरत ।
वळगी है मोकळी माटी घणी ई दूब
लता-बेळड्या, दिरखतड़ा,
माटी-मायड़ रा हरियाळा टाबरिया ।

लिखणवाळा, तू जाणै कोनी
काणा राखसडा लिखणा चावै इण वगत
नूवी महाभारत री कथा
वै हेरा-फेरी रा ढोल-नगाडा बजावता
सत्यानाश रै यज्ञ री वेदी उतर्‌या
होकडो लगाया
न्याई री बिरखा बरसावै ।

सून्याडे स्यू सरू

तेनू हाम वगाय रैवू ह गला वानी ।
गेला री माटी छूवती रैवू दोनू पगा हेठै ।
म्हारै नारूमर जुद्ध मन्तर वाळै अणगिण मिनख ।
कुण जुद्ध चावे म्हानै नी ठा ।
क्यू चावे, ओइ जाणू नी ।
म्हानै फगत ठा है पिरथी रै जलम लगन री कथा,
जिण वगत तीन भाग जळ अर एक भाग थळ नी हो ।
हू फगत जाणू वो ई ज सून्याड़े स्यू सरू हो
वा ई थुळथुळी "जैली जैड़ो पदारथ लिया
पिरथी रै चरित्र गठन रो इतियास ।
औ सगळो सोचता म्हारै हिवड़ै बिचाळै वरफीली बाय
वड परी भयानक छटपटावै ।
वा 'ई बाय घणी वळवळती ताती होया
वैगी वारै निसरै लाम्बा सास हुया ।
थकताई, नैण मीच्या नागासाकी री अगण
म्हानै बाळणी चावै ।
जदेई' दो छाटा जळ चावती
लोभण ज्यू ताकती रैवू ।
सगळा लोई दवणो चावै,
अगण दवणो चावै
किण रै ई नैणा माय जळ नी है ।
हिवड़ै रो सरवर सूखाया सगळा सूना होयोडा है ।
बै सगळा मुरधर नै स्मृतिया रो कमरो बणावै —
मुरधर माय सुपना री छिब कौरै ।
मृगतिसणा रै सागै हसी-ठट्ठा करै
सभ्यता रा दावेदार बण परा
माणखै रा लोई चावै
अर जुद्ध-मन्तर बाचै ।

हाथ

उजाळै रा फूल उपाड़ण स्यू पैला
आवो धोय नाखा नगनता री सगळी कळमष ।
आवो तावड़ियै नै पीठ लारै राख्या आमै-सामै बैठा ।
सवदा रै माहि तिरता तिरता
पार करा अधार-समदर ।
ठोकर खावतै मारगड़ै ई'
आवो पूगा चुपचाप आपा री पूगण ठौड ।
अणगिण रग वीहूणा हळ्दी-वरणा हाथ देखता
जोवण नै जाया ना जीवण रो रहस्य ।
वी स्यू चोखा वा रै पीळै हाथा
उठाय लीज्यो लड़ाकू - इतर री
एक-एक हाथ माय शीशी ।
सोरम मिळणै रै सुपना माय
शीशी खोलण री खेचल करता
पीळै हाथा नै वण जावण द्यो
लूठा लडाकू हाथ ।

जीवतो प्रतिवाद

आधी धाजै है सबदा री नदी माहि,
कलाकार रै अकासमणि फूल रै सुख स्यूं
रंग वदळै शिकारी-आख पखीड़ो ।
बी ठौड़ एक सौ आठ किवाड़ खुलता ई
एक ई' गुलाब मिळै कोनी
धौळै कागद ऊपर बिन-स्वारथ छिब राखता
कचळी भर राखै कोबरै साप रो बिस ।
बीयाई सङ्गम-गङ्गा आवती, मुखड़ै सैत ढाळै —
इया नी हुया, जैहरीलो हुय जाय ।

नदी स्यूं, उपनदी ताई
सगळो ई' निकासी-द्वार
स्वारथ री लार टपकती माटी चीकणी हुया
सगळा आपैई' तिसळ जाय
बी ई मारगडै ।
जका अगण री बाता सोचै
अणजाणै मुखड़ै परकास मिळता,
मूण्ढो हाथा स्यू पीचता
बैगा-बैगा सिरक जाय
आपरै आपरै मारगड़ै ।
ओज्यू सबदा रो घर
चिर-काळ माटी थका
मसाण हुवैलो ।
अगण माहि मिनख बळैलो
अगण माहि जगैला नी जीवतो प्रतिवाद ।

अणदेख्योडै पगा री छाप

भावना रै नीळै कागद नै हू फाड़ नाखी
घणै दिन । जीवण रो थोड़ो' क हिस्सो काळो रै'ग्यो
तौई पाछौ देखण जोगौ कोनी ।
घणा रग प्रहर-प्रहर बदळता जाय
रगील ई' कर सकी हू
भोर रै गुलदस्तै नै ।
सैधी गेला हुसियारी स्यू
मेलती चाली हूँ पगा री छाप ।
किण दिन पग नाखती, नी सकती,
तोल-मिळाण कर्‌या सोचू
कळ्या रा सगी साथीड़ा
हू सुरग रै द्वारै बैठ्या
निज गरभ माय ताकूली
माया-मळ्योड़ी पिरथी कानी ।
चिरळाया बोलूली —
फसळ फळापण जोगी माटी रैवताई,
सृष्टि माय कमी नी रैवैली ।
म्हारी बाता थारै काना माय
पूगण ताई पैला ई , थे
आगै-आगे सिधावौला घणी दूर
म्हारै साफ़-साफ़ मदमातै पगा री
छाप मण्डताई,
किण ई' घड़ी
का तारा जावता जावता
उठाय ल्यौला बोदो उजाळौ अर
गुम्योड़ै सबदा री खुराक ।

एक सवाल भय

घिर आवै है समै री छिब
घड़ी भोर रै तावडै री काया रै
भरम ।

उच्छब माहि, विश्वास घोळ्या

पीवै —
अर सुर माय ।

तावडो ढुळतो पडै

मुगत

ऐडी कोई बात नी ही
सदर दरवाजो बन्द हुवता
कैदीड़ा मुगति री माग नी करैला ।
प्राणा तरड़्या घुळताई
रोकणो पडैलो आखरा रो छन्द ।

ऐडी कोई बात नी ही
डाकूडा कदैई चोखी बाता सुणैला तो
पौरो दैणो पडैला फाट्योडी पाख्या नै ।

ऐडी कोई बात नी ही
मुगत मिनखा ने देसनिकाळो दिया
विदेसी बोलीजैला कोनी ।

छानेसी धौलै-उजाळै हियै-पिण्ड नै
सक सक आखी रात जाग'र काटता
सूरज रा दरसण का सू 'ई मिळैला नी ।
ऐड़ी कोई बात नी ही ।

एक सवाल भय

घिर आवै है समै री छिव
इण घडी भोर रै तावडै री काया रै
घणो ई' भरम ।
आखै दोपारै
दूधिया ऊजळै उच्छव माटि, विश्वास घोळ्या
रैवै काळी चादर ।
कण्ठ तिरिया मिरिया खुसी पीवै —
बिलखता सुर धुळ्या है सबदा अर सुर माय ।
कोई अन्तराळ नी है ।
जुद्ध रा कागद फोराया
माण्डणी पडैला
धौळै कबूतरा री छिव ।
चीलख री दीठ लिया चालै
समै री घडी ।
जकै दिरखत री पत्या स्यू चीकणो तावड़ो ढुळतो पडै
बो हिवडै बिचाळै जगाय राखै
एक सवाल भय ।

जिण ठौड रोही नी है

किण घडी किण नैई' इणविध उजास मेलतो नी देख्यो ।
इतरी मोकळी बाज री दीठ पार कर्‌या
किणविध कर्‌या खोदी ही
राखस री क़बर ?
जिण ठौड रोही नी है
रोही री गैराई माहि वरफ-अधार नी है
तो फेर सूरज रो प्रतिविम्व ई' है
अर गूगै काळै मूण्ढै वाता ।
वी ठौड अगण वळै दिव्य नैणा माहि
सुपना कोरै रग-विरगा ऊजळा छाटा ।
पाती-मागतोडा लुकता रैवै बिरथाई
अपजस रो जीवण झेल्या ।
बी ठौड सुख है दुख है
है थोडौ क बिष ।
बरसा री काई है
अर चुपचाप छानैसी लुकता रैवै
ज्यू सुखी घरा डाकूड़ा ।

चेतना

हाथ बधावूली किण रै पासै —
वास्तव (सत्) का परमेसर रै पासै ?
गणित रा सबद भाग अर चूर र
हरियाळो उजास जगावती
कल्पना रो उणियारो
गायब हुय जाय ।
ज्यू फुटबॉल नै पाख स्यू मारता
मैदान छोड उड जावै गद ।
चिरळावतै सबदा
मैदान फाटतो कळपतो
ओज्यू घिर आय
वास्तव (सत्) री चेतना माहि ।

इण एक पग ज़मीन

किण री आवण री वात नी ही ।
सोरता सोरता गुलमेंहन्दी रो छाटा पड़
फूल देवै फळ देवै नूवै जलमतें नै
हाथा स्यू सैण देवै ।
इण रो गैरो रहस्य रया हा किण ई कानी ?
हरियाळै खता माहि
का किण ई अणजाणै राही रै उन्छब माय ?
हीण्डतै अकास रै छानै सारै
किण ई' रै कोई पगा रा सवद आज ई' कानी ।
है फगत अन्तर रा मोकळा बुलावा अर
नैडी अगण माहि होम-आहूति रा कागद ।
सरू सरू री भूमिका वदळता
आथो वणणो पडैला कवळै नैणा री दीठ नै ।
निजू मनस्या लिया ऊण्डै खाडै माहि उतरै
करड़ी कळिया अर नैणा रो चानणो ।
अर इण ई एक पग जमीन ऊपर जितरो हुय सकै
फूल द्यो फळ द्यो जडा री माया बधावो
नी सरै जितरो उजाळो देखता नैणानै
बुझाय दवणो ई' ज चोखो ।
ईया करता उजास माहि देह नै तिरावणा
ठीक नी हुवैलो ।

थोडी'क आस जागै

सबदा रै माहि सोरम भर्योडी सोनाळी आभा देख्या
राज्य घडणो चावू हू फगत सबदा री
अणथक्योडी बिरखा स्यू ।
बिन-बादळ, अचाणचक, बदनामी रै बरसण स्यू सदैई'
सामी आया उभी कोनी ही ।
पण तौई आय धमकी प्रळय री बाढ ।
बाढ माय छमको-वगार दवती सबदा री पूनम
पगा पगा चाली समाज दिरखत रै दरबारा ।
उदास-सृष्टि रै उच्छबडा रो रूप बिगाड्या,
निकासी-द्वार पार कर्या,
अणमणो समदर पळका मारतो
दिसा-अत पारिजात ई खिलावैलो ।
सबदा री पतवार खेवणिया
सातू-समन्दा रै हिवडै घोळावै
जुडवै टाबरिया री प्रीत ।
कारपेट ऊपर कोर्योडी हरी दूब
सनकी सबदा रै माण्डणा रो गीरबो ।
रूई-पीज्योडो मेघडलो, गाव री गोरी तर्या
सबदा रै मोह तणै
खुल्ली खेत री गेला सिधावतो
रळमिळ जाय, रोही री हरियाळी माय ।
फगत सबद स्यू प्रीत परणाती धाप्योडी पद्मण रमणी
सोनै रा गैणा गाठा मेलै
मगतै री खाली झोळी माय ।

मा

सूरज ऊगण रै पैला मा न्हावणो निपटावै ।
वी रै कुरान पढ़ण रै सुरा टपटप पड़ै
भोर रा विलखता आस रा टोपा ।
रूखड़ला रोवणो चावै
पछीडा ठावस बधावै ।
तारा रो उजास झटपट वुझावतो –
अकास लुळलुळ आवै मा रै नैडै झरोखै माय ।
टावर-सूरजडो कुचमादी करता मा रै गाला नै छूय दवै
मा वारी कानी ताकै
तावड़ै री खळखळ हमी देख्या
कुरान बाचणो बन्द करती उठ जाय
कारज निपटावण नै ।
रूखडला सायत होवता
पछीडा सगळा ध्यान धरै कुरान रै सुर माय ।
मा नै उठ परी सिधावता देख र
आखै दिन गूगा हुय जाय सगळा पछीड़ा ।
अकास अर सूरज सागै चालै दिन भर री लडत ।
आ री पडगूज बाजै झराखै रै पल्लै
भीत रै कलैण्डर माय
सायत रूख री डाळ माय ।
घटना बैवती रैवै बाल्या
किण नै ई कोई लगाव हरख-कोड कोनी ।

अमर हुवै मिनख

धौळै कागद ऊपर कलम छूवावता
खुल्लै झरोखै अमर पछीड़ा
सृष्टि रा गीत सुणावै ।
धौळै कागद ऊपर कलम छूवावता
गोरड़ी री कमर माहिं बळखावणा नदी रो ।
धौळै कागद ऊपर कलम छूवावता
सबद वीटूणी चतना म्यू
सत् रो हिवड़ो चीरता निसरै कल्पना री काया ।
धौळै कागद ऊपर कलम छूवावता
पिरथी री लुक्योडी छाणछिप फाटताई
घणा-मोकळा भ्रष्ट जातरी वानप्रस्थ माय मरै ।
धौळै कागद ऊपर कलम छूवावता
छितर्योडे नक्शै बदळ जाय भौगोलिक अग्र रेखा ।
धौळै कागद ऊपर कलम छूवावता
मास रै बळबळतै खीरा ऊपर पग राखता
पाळो-पाळो चाली ज सकै घणी दूर ताई ।
धौळै कागद ऊपर कलम छूवावता
सून्याड़ै री दूरी कम कर्‌या
घणै सैहजपणै स्यू छूइ'ज सकै सूरज- चादडलै री देह ।
धौळै कागद ऊपर कलम छूवावता
मुट्ठी माय झाली'ज सकै
माटी री सारम, वार्यारयै रा सबद ।
धौळै कागद ऊपर कलम छूवावता
पिरथी रै हिवडै
गैरा गैरा दाग माण्डता कोरता
अमर हुवै मिनख ।

अधिकार रै डूगी-घाट ऊपर

औई समदर-किनारो सूनौ राखौ मत ना
'तथागत री तर्‌या सैवता सैवता,
थोडी' क ओळूडी कोर र राखौ बुद्ध रै नैणा ।
दूजा रै मुखडै जका हाव-भाव है
वै तो सगळाई देखै ।
मारग रै अन्त ताई ढाळौ सोरम,
अधिकार रै डूगी घाट ऊपर ।
सगळा रै निजू आपरै उजाळै माहि
तदेई था खातर हाथ वधता रैवैला
घणाई' जणा नैडै नैडै नाव स्यू हेलो दै'ला
हरियाली रै और एक दूजै नाव स्यू ओळखाण सारु
बिरखा रो बैवतो मेघडलो
सौ वार सूरज री ओट रया ई'
नैणा रो उजास नी घटैलो,
समे रो पडदो ओढ्या
असहाय सूवतै मुखडै नै मच ऊपर जगाय राखो
सिरजौ प्रकृत सून्याडो
तदैई थे कामणगर होया
पवित्र सुपना स्यू समदर किनारो भरावौला ।

अकास पडतो तारो

फगत इशारो हो
भोर रै गूगै ठैराव नै निरखण रो ।
थारो इशारो हो
सवारै रै तावड़ै माय न्हावण रो ।
हू अळगी होवणी चावू
सञ्ज्ञाहीन मूरत उज्जवळता स्यू ।
थारै एकलैपणै रो सुपनो हुया
रोस फूलायोड़ै वेलून माय थारी करडाण भर जाय,
वायरियै सूनो अकास पड़तो तारो ।
थारै आगणै सिरजण रै फूलां रा गोटा चमकी छितर्योड़ा
गोरवै री भीनी सोरम सायती स्यू मेहसूस करती
फूला रै हिवड़ै साभ'र राख् जदेई ।
देह रै परस स्यू आळखाण पूरण कर्या
गङ्गाजी री घाटी हुवणो चावू
'प्रेमिका' नी, पिरथी हुया
थारी माटी री सुहाग-सेजा ॥

कारीगरी री होड री रम्मत

ईयाळकी नींद माय मगन पिरथी रै खोळै
कारीगरी री होड री रम्मत ।
पिच्छम - वायरियै पैरण रा गाभा उडाया
उगाड़ी देह ।
बोलौ कैडो चमत्कार सभ्यता रै मेळै माय ।
अवेसकर हाथ ताळ्या बजावैला देखणवाळा ?
तितल्या पाख्या फडाय,
रेशम-कीडा नी होयाई —
तोई आहा बोलै कितरा लोग ।
तितल्या भले ई लारै नी फिरै, रेशम-कीडा बणण नै
आपा तो आदिम गुफा स्यू पाछा घिर आय सका हा ।
आपा तो महामानव रै कपाळ उपर
मौत री जादूई छडी छूवाया
बा नै राख सका हा
परी-कथावा रै राज्य माय सूवाया ।
जका खोटै सैनाण स्यू मारग देखै सामी
अधारो हेलो मारै चिर काळ
बैई ज जुद्ध रा ढोल-नगाडा कूटो ।
पुराणो इतियास पूछ परा
नूवो नकशो कोरो
सभ्यता रो होकडो पैर्‌या
'मॉडल कलचर' स्यू मुगध होया
आपरी धाप माहि डूबता जावो ।

ईयाळको दिन आवता

सिझ्या री दाग मण्ड्योडी दिरखत-छाळ पैर्‌या,
हाथ री मुट्ठी माय पढाई रो सातवा दिन झाल्या
कुवेळा रै पडदै, मलहम रो पळेथण द्‌यौला ममझ्या
सगळा नै मत स्वीकारज्यो ।
सबदा री वर्णछटा माहि खोटा अङ्क राख्या
जहाज़ रो डूबणो देखज्यो ।
बराबर आदर राखौला समझ्या
बई माहि दूध-भात लिखता थका
परै सिरकाय रया हो गरम भात री थाळी ?
सोनै रा शुक पछीडा
जुग री कथा रा अण्डा दवता
पैराय देवै मौन वरत री माळा ।
घर भागै घाटो मोसै
क़बर खोदै तो माटी बधै ।
अठारैह स्यू अस्सी बरस रा
पासळ्या भाग्या, लट्ठ टिकावै ।
एक दिन ठीक गळै ताई
जळ माय तळै डूबावता
रगील वेलून फसता
आवैली ई ज
ठीक तळै सिधावण री बारी ।

वगत री जमनाजी माय ।

इण करड़ै सूरज रै देसा
कूड़ी बाता बोलो मत ना बटाऊ,
गेला रो पाप लागै ।
घोड़े असवार री वेळा नदी री बाता सोचजे मत ना
लारै आधी आवै, अर नदी रो स्राप लागै ।
गेला सिधावता रोही री बाता बोलौ,
नदी उफणता, सुपना री बाता बोलौ
भीज्योड़ी पून नै डूगी समझ लीज्यो
लकड़ी रै पाटै सोनळियो तावड़ो सजाया
जीवण जाण सको, जुग घड सको ।
वैसाख री तपण स्यू नैण पुतळ्या रगाया
इन्नर-धणस ल्याय टाग्या
विछाणो सजाज्यो हरै पाता स्यू ।
आधै मगतै रो हिवडो उकसाया
सगळा सुर समझ लीज्यो
जितरी बासी बाता है
टूट्योडै ठाव माय जमाय
जमना जी माय बैवाय दीज्यो ।
जदैई कमळ-रोही माय पाथर नी खिलैला
कुवेळा चादडलो नी डूबैलो ।

इण समै

इण ई'ज समै रो एक अणसमझ मोद्यार आयो
म्हानै बोलग्यो
इण बगत आखर रो पृष्ठभूमि-चितराम कोरौ
समन्द री गति गेला कोर्‌या राखौ निज मनस्या स्यू
आकळ-बाकळ नैणा रै बिचाळै बसाय राखौ
करड़ी सूरज री किरण्या
रग बीहूणै अकासा, बिरखानै हेलो मारो मत ना मनड़ै,
जुगनू री तर्‌या, देट माहि अगण लिया
भरोसै री माटी माय प्रीत री लालसा राखो ।
आदिम नदी रो, किनारा भागण री कळपती सुबक्या रा
सबद सुणता थका ई'
चिन्ता मुगत रैवो ।
देखौला, एक दिन हिवड़ै रो नक्षत्र खिलैलो,
मन री चानणी माय घणाई ओळख्योड़ा मुखडा दीसैला ।
उण नैड़ ई ज सुख रा दिन
दात काढता - मुळकता नैड़ै बुलावैला ।
धौळै मेघा अर भोर रै ओस टोपा
का, दोनू हाथा अञ्जळि भरिया
जमनाजी माय, निज निज री नियति भाग्य
हर एक दिन सिझ्या-दिवलो जगावैला,
इचरज-प्रतिभा स्यू ।

वै

वै चानणी नै घणौई' चावता हा ।
जदैई दोपारै रै घग्घू रो रोळो सुणता थका
उदास हुया कोनी एकर 'ई ।
वै पळाश रै डाळै
फागण री अगन्न देखता थका
प्राण खोल परा हस्या हा ।
वै घणेरी अकास-गङ्गावा पाळा चालता थका
नाळै माय पड्या नी एकर' ई ।
बा रै लुक्योडै बाग माय लाल-कनेर
सिमरथ-समदा वै'ग्या हा ।
वै सोनळियै पीजरै ताणै
बिरथाऊ जलम नाख राख्या नी किण ई ठाय ।
वै आस-सूखावतै नरम तावडियै
गुलाबी नक्शो मिलाय
हिवडै माय बीज सचार्‌या हा ।
वै रग्योडी ओढणी बायरियै वैवाया
हज़ारू घटनावा नैडै
सायत बैठा हा ।

नष्ट मूरत छिव

पूरण अन्त री देह ऊपर अधार रो भींज्योड़ो रग ।
एक ऊजळै मकराणै आगणियै
सोग मनावतै शिल्पी रो
ऐड़ो ई एक छिन वार्योड़ो वाग ।
लोह री साकळ पगा, मोरणी रो निरत
गळै ताई गीली माटी माय डूबतो रैवतो रूख ।
अकासा छितर्योड़ो सिकारी रो जाळ
कवारी तार्वाड़ियै री काया लुटलुट सूवतो
लोई न्हायोड़ो भीर ।
तौइ किण ई ठौड़ एक मोरम-फूल खिलै
वायरियै माय वी री ई' भीनी खसबू वैवै,
कोई जागणो ई' नी चावै
इण नरक रै परकास माय
ऐड़ी दवा-खसबू कठै स्यू आवै ?
फगत ई जाणणो चावै
वी' ई सोग मनावतै शिल्पी रै
छिव-कोर्योड़ै वाग रो फूल,
धरम री किण ई' जड़ स्यू जकड़ीज्योड़ो है ।
वठै स्यू ई रग-कोरणी रो कैनवास छोड़्या
शिल्पी नष्ट-मूरत बणाया है ।

लोई माय उपचार आवतो

बो सिधायो अधार रो भय हिवड़ै लिया ।
पण पगाथिया ?
पगाथिया बी नै मिळैला तो चानणै रो स्विच
बिना दबाया ई ?
हुय सकै ज़हरीली वाय ई'
सास खीचती जीवैली और घणै दिना ।
कैडो ओपतो उजास अर न्हावण रो घाट मिलता
बाढ़ रो झरोखो खोल्या
उण पछै सबद स्यू बिन सबदा सिधावैलो
लोई माय उपचार ल्यावतो, कुबेळा कामणगर ।
बी रै पैला बीच बीच माय
बिलखतै नैणा ताकैलो
लारै पड्यो रैवतो एकल गळियारै माय ।
बौ खुद ई नी जाणै घडी माय अलार्म
ओज्यू बाजैला क नी ।
हळदी बरणी दीठ लिया
घर री भीता माथै
मूरत नी माण्डैलो
और किण ई बेळा ।

इमरत रो ठावस

सका विना फाट्योडो मेघड़लो
वधती वेळा
भौलायोडै छन्दा, निस्सरमी स्वरलिपि ।
लोई बिना शकुनि रो मनड़ो
सड्योडी मुडदी-देह माहि
इमरत रो ठावस जावतो फिरै ।
सूवतौ माथै हाथ टिकाय
मगन नसै माय,
राजमिस्त्री रै हाथा
टाबरिया रा रम्मतिया ।
सुपनै रो ध्यान भाग्या
तावडो गीलो हुवण द्यो
नरक रै भरम स्यू ।
परभाती दीठ स्यू धुपण द्यो
रातडली रो अधार ।
पसरायोडी आखी देह सूप द्यो
विन-डर्योडै मसाण-जातरी रै हाथा ।
लोमडी रै नखा स्यू बाजण द्यो
कङ्काळ अस्थिया रो मिरदङ्ग ।

इणविध नी है ।

अकास री चावना नी है नरम बिछाणो
तोई पण मिळी है मेघडलै री रूई ।
धौळे केसा रो सुपनो नी हो मन माय
हो नित-जोबन आळी ऊषा रो रूप
स्थळ-पद्म री तर्‌या भोर रो पुञ्ज ।

नसेडी भायल्या सागै धरा घिरतो
कबूतर्‌या रो टोळो देख्या
भवर स्यू दिसा-भटक्योडा माझी-मल्लाहा रो पिछतावो ।
हरी पत्या माय हो खटास रो रग
अणदीसतो नूवोपण ।
बाध भाग्योडै चादडले री लैर्‌या रो उफाण ।
तावडो हो, बिरखा ही
माया माहि तारा रो राता काटणो ।
इण बेळा काळख सन्योडी ऊजळी रेखा
सैनाण - बिन
फगत लिलाड रै सळ माहि थोडो क आभास ।

किण ई' दिन कोजो वगत आवता

सुण तू किण ई' दिन हताशा री रुत नै
पासै आवण दीजे मत ना ।
अधराता नींद टूटताई
सोनाळै दोपारै री बाता सोचजे ।
अर किण ई दिन कोजो वगत आवता
रेजगारी रा सबद कर्‌या
जगाय नाखजे गुवाड - गेला ।
तू दूधिया चानणी खातर किण ई' दिन
आस - उम्मीद करजे मत ना —
इण स्यू ई घणा है गैरो अधार ।
हियै पिण्ड उपर, ठण्डो हाथ राखण स्यू पैलाई —
उण नै फटकारतो टोर दीजे घर आगण स्यू ।
गरबीलो मूण्ढो वणाया बोलजे ।
थानै जळरा छाटा सागै ल्यावण नै बोली कोनी ही
दिखणादी बाय नै बोली ही
एक मेघ-ढक्योडा तारो ढक्योडै दूनै माहि ल्यावण नै ।
बो सिधावण स्यू पैला थानै घणी ई'
काठी-करडी बाता सुणावैलो
बी बाता नै कदैई' सुणजे मत ना
क्यूकै ऊपर उठणै रो और कोई मन्तर
तू नी जाणै ।
ओज्यू किण ई' दिन
जे दूजो मन्तर जाण सकैलो तो
चित मन लगाय कारज करतो
काया नै बैवाजे मत ना ।

अमावस रो भैरव

उण वेळा जळ-कमळ-वेलडी लगोलग जळ माय रमती ही ।
दिरखत रा पात बायरियै रा साज़ बजावता हा ।
जगत सजधज' र त्यार हुयो इमरत री साध सारू,
बायरियै माय बारुद री गन्ध नी ही ।
माधवी लता-वेलड़ी नै निरख निरख थापी ही मोमाख्या
एक दिन तिसळतै तावड़ियै दोपारै पछै-
सुर वजायो हो अमावस रो भैरव ।
जलम-पत्री उण वगत वणी ही
फगत थोडो थोड़ो क करया
फूटरापो छाय रयो हो नैणा रै उजास माहि ।
जळ सूखग्यो जळ-कमळ पाता रो
पळका मारतै आस-टोपा रै खिलताई—
आली माटी री सहेली रै हाथ रो सैण मिळताई
विरखा फुहारा रै ख्याली हरख कोड स्यू
देह रो सगळो सत्त-अरक सोस्या
कमर नै सीधी राख्या
घणी खेचल करगी ।
अनादर स्यू काळी पडगी गैरी चोटा खावती
आली माटी री पासळ्या ।
इतरो विरथा ई' हुयो —
तोई हिवडो ममोस-पीचीजतो बधाय देवै
जळ-बेलडी री लाम्बी उमर ।



করুণাশঙ্কর শ্রীমালী। রাজস্থানের বিকানীর অঞ্চলের মানুষ। জন্ম কলকাতায়। পড়াশোনা কলকাতায়। কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের স্নাতক। পরে এম এ এল এল বি। পরে রাজস্থানে চলে যান যদিও তাঁর অনেক আত্মীয় থাকেন কলকাতায়। রাজস্থানে সরকারী চাকরি করতেন। বর্তমানে অবসর নিয়েছেন। বাংলা ভাষা ভালোই জানেন, সাহিত্য চর্চা করেন। বাংলা সাহিত্যের খবরাখবর রাখেন। রবীন্দ্রনাথ ও নজরুলের লেখা পড়েছেন তাঁদের লেখা গান ভালো লাগে। তিনি নিজে গান জানেন। গীতবিতানের শতাধিক গান রাজস্থানী ভাষায় অনুবাদ করেছেন। নজরুলের একহাজারের বেশি গান স্বরলিপি সহ রাজস্থানী ভাষায় অনুবাদ করেছেন। নজরুলের জন্ম ও মৃত্যু — এই দুটি দিনে তিনি রাজস্থানে অনুষ্ঠানের আয়োজন করেন। বহু শ্রোতা আসেন — রাজস্থানের বিভিন্ন অঞ্চলে তিনি গানের আসর বসান। শ্রোতারা রবীন্দ্র সঙ্গীত এবং নজরুল গীতি শোনেন। তাদের ভালো লাগা প্রকাশ পায় যখন তারা উৎসাহিত হয়ে গানও শেখেন। অর্থাৎ শ্রীমালীর স্কুল পড়ুয়ারা গান শিখতে যান। সামগ্রিকভাবে রাজস্থানের সাংস্কৃতিক জগতে তিনি সাড়া ফেলে দিয়েছেন। সম্প্রতি আনন্দবাবুর বাংলা কবিতার বই রাজস্থানী ভাষায় অনুবাদ করে ছাপা শেষ। শীঘ্রই বার হবে।